

Q.No - (4) (स)

(10) अंक

Question No (7)

(5) अंक

शब्द समूहों के लिये एक शब्द

जिसे कहा न जा सके - अकथनीय

जो हमरण रखने योग्य है - हमरणीय

{ जो चक्र (घाट) करता है - चक्रघर

{ जिसके (इष्ट) में चक्र है - चक्रपाणि

जिसका कोई शत्रु पैदा न हुआ हो - अजातशत्रु

जिसका कोई शत्रु न हो - निःशत्रु

जिसने इन्द्रियों को जीत/वश में कर लिया हो - जितेन्द्रिय

जिसने इन्द्र को जीत लिया हो - इन्द्रजीत

{ जंगल में लगने वाली आग - (दावानल)

{ समुद्र में लगने वाली आग - (बड़वानल)

{ भोजन पचाने वाली पेट की आग - जठराग्नि (वैश्वानर)

{ मृत्यु के समय जलाई जाने वाली आग - (संशय)

रास्ते में खाने-पीने वाली खाद्य सामग्री - पाथेय

जो अभी-अभी उत्पन्न हुआ हो - प्रद्युम्न (नवजात X)

नीले रंग का कमल - इंदीवर

इससे में दोष खोजने वाला - दिष्टान्वेषी

{ जिसे (करना) कठिन हो - दुष्कर

{ जिसे करना आसान हो - सुकर

{ जिसे पाना कठिन हो - दुर्लभ

{ जिसे पाना आसान हो - सुलभ

अधिक बोलने वाला - वाचाल

बिल्कुल न बोलने वाला - मूक

{ कम बोलने वाला - (मितभाषी), गधुर बोलने वाला - (मृदुभाषी)

महल का वह स्थान जहाँ रानियों का निवास हो - अंतःपुर

{ जो (पहले था) अब नहीं - (अस्तित्व)

{ जो (पहले कभी न) हुआ हो - (अस्तित्व)

जहाँ सिकके ढाले जाते हैं - लकसाल

वनस्पति खा कर रहने वाला - शाकाहारी

{ बहुत समय तक हमरण रखने योग्य - (चिरहमरणीय)

{ हमरण रखने योग्य - हमरणीय

दावानल
बड़वानल
वैश्वानर
संशय

जिसे जीता न जा सके - अपेय
 जिसे पराजित न किया जा सके - अपराजेय
 जिसे जीत लिया गया है - विजित
 जिसने जीता है - विजेता
 जिसने सबको जीत लिया है - सर्वजीत

विजित
 विजेता
 अपेय
 अपराजेय
 अक्रान्त
 अक्रान्ता
 निःशत्रु
 अजातशत्रु
 सर्वजीत
 शत्रुघ्न
 युयुत्सा
 युयुत्सु

✓ उत्पन्न होने वाला - आकास्मिक
 सौ करोड़ की संख्या - शतकोटि / अरब
 ऊपर कहा गया - उपर्युक्त (उपरि + युक्त)

ऊपर लिखा गया - उपरिलिखित

जिसका विश्वास ईश्वर पर है - आस्तिक

जिसका विश्वास ईश्वर पर नहीं है - नास्तिक

✽ जो पहले कभी सुना न गया हो - अश्रुत श्रव

जो पहले देखा न गया हो - अदृश्य श्रव

जल में रहने वाला प्राणी - जलचर

धरती पर रहने वाला प्राणी - धलचर

जल, धल दोनों पर रहने वाला प्राणी - उभयचर

आकाश में उड़ने वाला प्राणी - खग / नभचर

जो नया-नया आया है - नवागन्तुक

जो मुकदमा दापर करता है - वादी (मुद्दयी)

जिस पर मुकदमा दापर होता है - प्रतिवादी (मुद्दालेह)

जो शत्रु की हत्या करता है - शत्रुघ्न

जो अपनी हत्या करता है - आत्महंता

जो सबसे पहले गिनने योग्य है - अग्रगण्य

जो गिनने लायक नहीं है - नगण्य

आगे-आगे चलने वाला - अग्रगामी

पीछे-2 चलने वाला - पश्चगामी / अनुगामी

आगे-आगे चलकर रास्ता दिखाने वाला - पथप्रदर्शक

जानने की इच्छा - जिज्ञासा

जानने की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु

पीने की इच्छा - पिपासा

पीने की इच्छा रखने वाला - पिपासु

जलचर
 धलचर
 नभचर
 उभयचर

खाने की इच्छा - बुभुक्षा
 खाने की इच्छा रखने वाला - बुभुक्षु
 युद्ध की इच्छा - युयुत्सा
 युद्ध की इच्छा रखने वाला - युयुत्सु
 मोक्ष की इच्छा - मुमुक्षा
 मोक्ष पाने की इच्छा रखने वाला - मुमुक्षु
 मरने की इच्छा - मुमूर्षा
 मरने की इच्छा रखने वाला - मुमूर्षु
 वह बीमारी जो कभी ठीक न हो सके - असाध्य
 जिस पद के लिए वेतन न मिलता हो - अवैतनिक
 जिसकी जीविका अम द्वारा चले - अमजीवी
 जो बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाय - आशुतोष
 जिसके पास रुक न हो - अकिंचन
 जो आज्ञा से परे हो - आज्ञाशित
 जिसकी आज्ञा न की गई हो - अज्ञाशित
 आज्ञा लगाने वाला - आज्ञाजनक
 पैर से लेकर मस्तक तक - आपादमस्तक
 जिसके हाथ में शूल / बिशूल हैं - शूलपाणि
 जिसके हाथ में बीणा है - बीणापाणि
 जिसके हाथ में बज्र है - बज्रपाणि
 पर्वत को धारण करने वाला - गिरिधर / गिरिधारी
 जो लोहे की तरह बाधित है - लौह पुरुष
 जिससे कटा न जा सके - अकथनीय
 जिसका वर्णन न हो सके - अवर्णनीय
 जिससे बाणी / वचन गलत न कहा जा सके - अनिवर्चनीय
 धीरे-धीरे या मंद गति से काम करने वाला - दीर्घश्ली
 जल में उत्पन्न होने वाला - जलज
 आँखों से उत्पन्न होने वाला - आण्डज
 पक्षी से उत्पन्न होने वाला - स्वैदज
 धरती कोड़ कर जन्म लेने वाला - उद्गाभिज
 स्वयं उत्पन्न होने वाला - स्वयंभू

उद्गाभिज
 आण्डज
 जलज
 स्वैदज
 स्वयंभू

जिसे बाहरी दुनिया का कोई ज्ञान न हो - कूपमण्डक

धरती और आकाश के बीच का स्थान - अथर

धरती और गूहों के बीच का स्थान - अन्तरिक्ष

वह बिन्दु जहाँ धरती एवं आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं - क्षितिज

जहाँ पर नदियाँ मिलती हैं - संगम

जो तीनों कालों को जानता है - त्रिकालग्य

जो तीनों कालों को देखता है - त्रिकालदर्शी

मरण के रूप में दी जाने वाली सहायता - तत्कावी

जो अपने पद से हटा दिया गया है - पदच्युत / अपदस्त

जो पूजने योग्य है - पूज्य / पूजनीय

जिस समय भिक्षा बड़ी मुश्किल से मिलती है - दुर्भिक्ष

जिस पर आक्रमण हुआ है - आक्रान्त

जिसने आक्रमण किया है - आक्रान्त

जिसके समान कोई दूसरा न हो - आद्वितीय

जिसके बराबरी का कोई दूसरा न हो - बेजोड़

जिसकी धर्म में निष्ठा हो - धर्मनिष्ठ

धर्म से सम्बन्धित - धार्मिक

धर्म को मानने वाला - धर्मज्ञ

जिसका यश चारों ओर फैला हो - यशस्वी

जो कभी मरे नहीं - अमर

जो कभी बूढ़ा न हो - सजर

बॉल हाथ से काम करने वाला - लव्यचारी

जिसकी सुनने की शक्ति शीघ्र हो गई हो - बाधिर

उत्तर व पूर्व का कोण - ईशान

पूर्व व दक्षिण का कोण - आग्निर्कोण / आग्नेय

दक्षिण व पश्चिम का कोण - नैऋत्य

पश्चिम व उत्तर का कोण - वायव्य

पर्वत के ऊपर की समतल भूमि - आधित्यका / पहाड़

पर्वत के नीचे की समतल भूमि - उपत्यका / घाटी

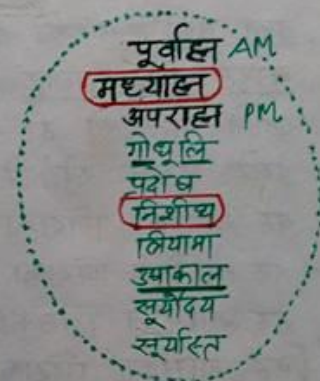
दो पर्वतों के बीच की भूमि - दोणी

जिसका जन्म कन्या (अविवाहित माँ) के गर्भ से हुआ है - कार्त्तिक

अथर
अन्तरिक्ष
क्षितिज



- ✓ ऐसी खन्तान जो वैद्य है - औरस
 ऐसी खन्तान जो अवैद्य है - जारज
 जो पुत्र अपने पिता के शरीर से उत्पन्न हो - आत्मज / तनय
 एक ही माँ के पेट से उत्पन्न - सहोदर
 दूसरी माँ के पेट से उत्पन्न - अंत्योदर
 वह ग्रहण जिसमें सूर्य / चन्द्रमा शरीर भर डंक जाय - सर्वग्रस्त / खग्रस्त
 वह ग्रहण जिसमें सूर्य / चन्द्रमा आंशिक रूप से डंके - खण्डग्रस्त
 हरा-भरा मैदान - शाद्वल
- ✓ तारों भरी रात - विभावरी
 जिसकी कल्पना की जा सके - कल्पनीय
 जिसकी कल्पना न की जा सके - अकल्पनीय - जिसकी कल्पना की गई हो - कल्पित
 जिसकी कल्पना न की गई हो - अकल्पित
- ✓ जो पढ़ा न गया हो - अपठित
 जो कल्पना से परे हो - कल्पनातिर
 जो आशा से परे हो - आशातिर
 सुन्दर आँखों वाली - सुनैना / सुलोचना
 जहाँ तक सम्भव हो - यथासंभव
 जिसकी ग्रीवा सुन्दर हो - सुशिव
 दो बार जन्म लेने वाला - द्विज
 जिसका कोई आधार न हो - आधारहीन
- { आकाशबेखरी/हूने वाला - गगनस्पर्शी
 आकाश को चूमने वाला - गगनचुम्बी
 आकाश को भेदने वाला - गगनभेदी
- खिलने मृत्यु पर बिजय पा लिया हो - मृत्युंजय
 जिस काम के लिए बेतन न मिलता हो - अवैतनिक
 दूसरों से ईर्ष्या करने वाला - ईर्ष्यालु
 दोपहर से पहले का समय - पूर्वाह्न
 दोपहर का समय - मध्याह्न
 दोपहर व सन्ध्या के बीच का समय - अपराह्न
 सन्ध्या व रात्रि के बीच का समय - गोधूली
 रात्रि का पहला पहर - प्रदोष
 मध्य रात्रि का समय - निशीथ



रात्रि का तीक्ष्ण पहर - त्रियामा
 सूर्योदय से पहले का समय - उषाकाल
 सूर्य उगने का समय - सूर्योदय / अह्नोदय
 दैव / प्रकृति से मिलने वाला कह - आधिदैविक
 व्याप्ति / प्राणियों से मिलने वाला कह - आधिभौतिक
 जो मौख न खाता हो - निरामिष
 मौख खाने वाला - स्नामिष
 जिसने पुण्य कार्य के लिए अपने प्राण दे दिया हो - हुतात्मा
 जो सब स्थानों से सम्बन्धित हो - सार्वभौम
 लाल रंग का कमल - कौकनद
 सफेद रंग का कमल - पुण्डरीक
 जो अभी खिला न हो - अप्रफुल्लित
 दस वर्ष तक की अविवाहित कन्या - गौरी
 बारह से सोलह वर्ष तक की नायिका - किशोरी
 अपने पति से ही प्रेम करने वाली नायिका - स्वकीया
 दूसरे पुरुष से प्रेम करने वाली नायिका - परकीया
 वह नायिका जिसका पति परदेश चला गया हो - पोषितपत्निका
 वह नायिका जिसका पति परदेश से आने वाला हो - आसन्नपत्निका
 वह नायिका जिसका पति परदेश से लौट आया हो - आगतपत्निका
 वह नायिका जिसका अभी-अभी विवाह हुआ हो - नवोदा
 वह नायिका जिसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया हो - मह्युदा
 वह नायिका जिसके विवाह का बचन दे दिया गया हो - वाग्दत्ता
 हंस की तरह चलने वाली स्त्री - हंसगामिनी
 हथिनी के समान चलने वाली स्त्री - गजगामिनी
 मृग की तरह आँखों वाली - मृगनयनी
 मछली की तरह आँखों वाली - मीनाक्षी
 वह स्त्री जो पहले पति के मरने पर दूसरे से व्याही गई हो - पुनर्भू
 जिस स्त्री के पुत्र पति न हो - अगिरा
 वह नायिका जो प्रिय से मिलने के लिए रात में निष्कृत स्थान पर जाये
 - आभिसारिका
 एक साथ अनेक तरह का काम करने वाला - बहुयन्त्री

कौकनद
 इन्दीवर
 पुण्डरीक

वाग्दत्ता
 आयुष्मति
 होने वाली

दशक - 10
 शताब्दी - 100
 राज जयन्ती - 25
 स्वर्ण जयन्ती - 50
 हीरेक जयन्ती - 60
 प्लेटिनम - 75

दस वर्षों का समय - दशक
 सौ वर्षों का समय - शताब्दी
 सौ की संख्या - शत

पच्चीस वर्षों पर मनाया जाने वाला उत्सव - रजत जयन्ती
 पचास वर्षों पर मनाया जाने वाला उत्सव - स्वर्ण जयन्ती
 साठ वर्षों पर मनाया जाने वाला उत्सव - हीरेक जयन्ती
 किसी महान् व्यक्तिके के सौवें वर्ष का उत्सव - जन्म शताब्दी
 किसी महान् व्यक्तिके के निधन की वार्षिक तिथि - पुण्य तिथि

- ✓ जो नियमानुसार न हो - अनियमित
- जो श्रेष्ठ गुणों से युक्त हो - आर्य
- ✓ धर्म का पालन करने वाला - धर्मनिष्ठ
- धर्म को जानने वाला - धर्मज्ञ
- जिसे वाणी व वचन झरा न कहा जा सके - अनिर्वचनीय
- जो आँखों से सुनता हो - पशुश्रवा
- ✓ जो जानने योग्य हैं - ज्ञेय
- ✓ जिसका क्रम न रहे - सतत
- जहाँ लेना रखी जाती हैं - दावनी
- मटमैले रंग का - धूसर
- अंगूर के रस से बनाई जाने वाली दवा - द्राक्षासव
- जो कष्ट सहन कर सके - कष्ट सहिष्णु
- जो आँखों के लाभने उपास्थित न हो - परोक्ष
- ✓ सुधी प्रशंसा करने वाला - चापलूस
- ✓ वह भारतीय जो विदेश में रहता है - प्रवासी
- अपनी इच्छा से आचरण करने वाला - स्वेच्छाचारी
- दाती के बल चलने वाला - उरग
- ✓ आँख मूढ़ कर पीढ़े-पीढ़े चलना - अंधानुकरण
- रंगमंच के परदे के पीढ़े का स्थान - नेपथ्य
- जो दान पर चलता है - दातव्य
- अच्छा हृदय रखने वाला - सुहृदय
- दिशाएं ही जिनका वस्त्र है - दिगम्बर
- एक ही बात को बार-बार कहना - पिष्टपेषण
- ✓ धर बसाकर रहने वाला - गृहस्थ

शब्द समूहों के तिरु रूप शब्द

PCS (Mains) 2011.

- (i) जिसका उत्तर न दिया गया हो - अनुत्तरित
- (ii) अपने मत को मानने वाला - स्वमतावलंबी
- (iii) जो कहा न गया हो - अकथ्य
- (iv) परम्परा से सुना हुआ - पारम्परिक
- (v) जो देखने योग्य हो - दृष्टव्य

PCS (Mains) 2010

- (i) जिसे जानने की इच्छा है - जिज्ञासु
- (ii) पृथ्वी से सम्बद्ध - पार्थिव
- (iii) जो शर्व में था, परन्तु अब नहीं - श्रुतशर्व
- (iv) जो कछिआई से मिलता है - दुर्लभ
- ✓ (v) जो आँख से परे हो - परोक्ष

PCS (Mains) 2009

- (i) संदेश ले जाने वाला - संदेश वाहक
- ✓ (ii) जिसकी गठराई नापी न जा सके - अग्राह
- ✓ (iii) नष्ट न होने वाला - अनश्वर
- (iv) जिस स्त्री का पति जीवित है - सधवा
- (v) व्यर्थ खर्च करने वाला - अपव्ययी

PCS (Mains) 2008

- (i) जिसकी आशा न की गई हो - अप्रत्याशित
- (ii) जानने की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु
- (iii) पक्ष के शाय छोड़ दी गई स्त्री - पारित्यक्ता
- (iv) पृथ्वी की तरह चलने वाली स्त्री - गजगात्रिणी
- (v) जिसका शत्रु न जन्मा हो - अजानशत्रु

खिर पर चारण करने योग्य - त्रिरोषार्य
जिसके हृदय में ममता नहीं - निर्मम
जिसके हृदय में दया नहीं - निर्दय
पीढ़े जन्म लेने वाला - अनुज
आगे जन्म लेने वाला - अग्रज

✓ जो कुछ नहीं जानता - अज्ञ

दूरी के वश में रहने वाला - दूतैण

✓ जो अत्यन्त कष्ट से निवारित हो - दुर्निवार

जो खरों से जन्मता है - खराखिज

दूसरों का भला चाहने वाला - परार्थी

अपना भला चाहने वाला - स्वार्थी

आया हुआ - आगत

✓ लौट कर आया हुआ - प्रत्यागत

देखने योग्य - दृष्टव्य

सूझने योग्य - सूक्ष्म

करने योग्य - कर्तव्य

सूजने योग्य - सूक्ष्म

खनने योग्य - खन्य

खाने योग्य - खाद्य

आदि से अन्त तक - आद्योपान्त

V. Smpl { जिससे समा न जा सके - अपरिमेय

{ जिससे प्राण द्वारा सिद्ध न किया जा सके - अप्रमेय

✓ लाभ की इच्छा - लिप्सा

✓ जीतने की इच्छा - जिगीषा

खाने की इच्छा - बुभुक्षा

{ जिसे अपने कर्तव्य का ज्ञान न हो - कर्तव्यविमूढ

{ जिसे अपना कर्तव्य न खुश रहा हो - किं कर्तव्यविमूढ

किसी वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा - अभिरक्षा

जिसे खरीद लिया गया हो - क्रीत

अपने गुणों से संपन्न मुखीर नाथक - धीरोदान्त

आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वाला - नौर्विक

पीढ़ी/पिता से प्राप्त हुई संपत्ति - रिषय/शारी/विरासत

सबकुद पाने वाला - सर्वलब्ध

शरीर के साथ काम करने का समझौता - सांविदा

PCS (Mains): 2008 spl.

- (i). जिलेका ईश्वर में विश्वास हो - आस्तिक
- (ii). वह जिलेका कोई शत्रु न हो - निःशत्रु
- (iii). वह लड़की जिलेका विवाह होने को हो - आयुवमति
- (iv). वनस्पति का आहार करने वाला - शाकाहारी
- (v). जो दायर मुकदमे का प्रतिवाद करे - प्रतिवादी

PCS (Mains): 2007

- (i). जिलेके आने की तिथि न हो - अतिथि
- ✓ (ii). जिले भले-बुरे का ज्ञान न हो - अविवेकी
- (iii). पैर से मल्लक तक - आपादमल्लक
- (iv). नीले रंग का कमल - इन्दीवर
- (v). जो अभी-अभी उत्पन्न हुआ हो - प्रत्युत्पन्न

PCS (Mains): 2006

- (i). जिले ईश्वर में विश्वास न हो - नास्तिक
- (ii). पक्षीने से उत्पन्न होने वाला - ह्वेदज
- (iii). जो मौख न खाता हो - निरामिष
- (iv). जानने की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु
- (v). जहाँ खाना मुफ्त में मिलता हो - खदात्रत

PCS (Mains): 2005

- ✓ (i). जो कुछ नहीं जानता है - अज्ञ
- (ii). धरती और आकाश के बीच का स्थान - अधर
- (iii). जो गठना करने के अयोग्य हो - नगण्य
- ✓ (iv). मन की बात जानने वाला - मर्मज्ञ
- (v). जिले बुलाया न गया हो - अनाइत

PCS (Mains) 2004

- (i). जितने शब्दों में न कहा जा सके - अकथनीय
- (ii). गुरु के समीप या साथ रहने वाला छात्र - अन्तेवासी
- (iii). जिसका कभी अंत न होने वाला हो - अनंत
- (iv). जो सब कुछ उदारता से देना जानता हो - (औदार्यदाता)
- (v). जो जरा सा भी खर्च करने में आनाकानी करता हो - कंपूस

PCS (Mains) 2004 spl.

- (i). प्रिय वचन बोलने वाली स्त्री - प्रियंवदा
- (ii). जिसको जीतने वाला कोई शत्रु पैदा न हुआ हो - अजातशत्रु
- (iii). जो बहुत आगे तक सोच कर काम करता हो - अग्रलोची
- (iv). जो मृत्यु के मुख में जाने को है - मरणसन्न
- (v). बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य - चिरस्मरणीय

PCS (Mains) 2003

- (i). जिसके जाने की तिथि न हो - अतिथि
- (ii). जिसने भले-बुरे का ज्ञान न हो - अविवेकी
- (iii). जिसने कभी व्यक्त न कर सके - (अनिवर्चनीय)
- (iv). जिसका कोई शत्रु उत्पन्न न हुआ हो - अजातशत्रु
- (v). ऐसा गृहण जिसमें पूरा खर्च हो जाय - सर्वग्रास

PCS (Mains) 2002

- (i). ऐसी जीविका जो आकाशिक हो - (आकाश ब्रम्ही)
- (ii). पृथ्वी व ग्रहों के बीच का स्थान - (अंतरिक्ष)
- (iii). जो सामान्य नियम के विरुद्ध हो - (अविधिक)
- (iv). ज्ञान के नेत्र से देखने वाला अन्धा व्यक्ति - (दिव्य-चक्षु)
- (v). दूध-दही, घृत-शर्करा तथा मधु मिश्रित पदार्थ जो देवताओं व भगवान के स्नान हेतु बनाया जाता है - पंचामृत

PCS-2001

- (i) जिसकी कोई सीमा न हो - असीम
- ✓ (ii) जिसको जाना न जा सके - अज्ञेय
- (iii) जो सब कुछ जानता हो - सर्वज्ञ
- (iv) जिसका आदि-अन्त न हो - शाश्वत
- (v) जो पढ़ना-लिखना जानता हो - साक्षर

PCS-2000

- (i) जो व्याकरण अच्छी तरह जानता हो - वैयाकरण
- (ii) दोपहर के बाद का समय - अपराह्न
- (iii) जिस पर मुकदमा चलाया गया हो - प्रतिवादी
- (iv) जो व्यक्ति अधिक खेलता हो - वान्छाल
- (v) जिसे अपने कर्तव्य का ज्ञान न हो - कर्तव्यविमूढ़

PCS-1999

- (i) जो कुछ न जानता हो - अज्ञ
- (ii) धरती व आकाश के बीच का स्थान - अधर
- (iii) जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो - अतीन्द्रिय
- ✓ (iv) जिसके खिर पर चन्द्रमा है - चन्द्रमौलि
- (v) जिसे अपने कर्तव्य का ज्ञान न हो - कर्तव्यविमूढ़

PCS (Mains): 1998

- (i) जो व्यक्ति विदेश में रहता हो - प्रवासी
- (ii) जो एक से अधिक भाषाएं जानता हो - बहुभाषाविद्
- (iii) जो युद्ध में स्थिर रहता हो - युधिष्ठिर
- (iv) संध्या व रात्रि के बीच का समय - प्रदोष
- (v) अनुचित बात करने के लिए अनुग्रह करना - दुराग्रह

PCS (Mains) : 1997

- (i) जानने की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु
- (ii) जिसके हृदय में समता नहीं - निर्भम
- ✓ (iii) जो हमेशा रहने वाला हो - शाश्वत
- (iv) जिसकी स्त्री सुन्दर हो - सुश्रुति
- (v) जो आमिष (मांस) नहीं खाता - निरामिष
- (vi) जो मृत्यु के समीप हो - मरणसन्न
- (vii) जो उपकारों को नहीं मानता - कृतघ्न
- ✓ (viii) कठिनाई से समझने योग्य - दुर्वैय

PCS (Mains) : 1996

- (i) जिस पर अनुग्रह किया गया हो - अनुगृहीत
- (ii) जिसका निवारण न हो सका हो - अनिवार्य
- ✓ (iii) जो किली पर अभियोग लगाए - अभियोगी, जिस पर अभियोग लगाया जाय - अभियुक्त
- (iv) जो अवश्य होने वाला हो - अवश्यंभावी
- ✓ (v) जो विधि/काय के विरुद्ध हो - अवैध
- (vi) जो शोक करने योग्य न हो - अशोक्य
- (vii) जिस पर आक्रमण हो - आक्रान्त
- (viii) जिस पर चिह्न लगाया गया हो - चिह्नित

PCS (Mains) : 1995

- (i) जिसके समान दूसरा न हो - अद्वितीय
- (ii) जो सब कुछ जानता हो - सर्वज्ञ
- ✓ (iii) जिसका कोई अर्थ न हो - व्यर्थ
- (iv) जो उपकार मानता हो - कृतज्ञ
- (v) जो पढ़ना लिखना जानता हो - साक्षर
- (vi) जिससे जीता न जा सके - अपेय
- (vii) जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो - अजातशत्रु
- (viii) अच्छे कुल में जन्म लेने वाला - कुलीन
- (ix) जो शू को धारण करे - शूधर
- (x) जिसने मृत्यु को जीत लिया हो - मृत्युंजय

PCS (Mains) : 1994

- (i) जिस पर अनुग्रह किया गया हो - अनुगृहीत
- (ii). गुरु के साथ या समीप रहने वाला दात - अन्तेवासी
- (iii). जो क्रुद्ध न जानता हो - अज्ञ
- (iv). जिसका निवारण न हो सकता हो - अनिवार्य
- (v). जो अवश्य होने वाला हो - अवश्यंभावी
- (vi). जो विधि या कानून के विरुद्ध हो - अवैध
- (vii). जो शोक करने योग्य न हो - अशोक्य
- (viii). जिस पर आक्रमण हो - आक्रान्त
- (ix). जिस पर चिह्न लगाया गया हो - चिह्नित

PCS (Mains) : 1993

- (i) जानने की इच्छा - जिज्ञासा
- (ii). जिसके हृदय में ममता नहीं - निर्मम
- (iii). जो हमेशा रहने वाला हो - शाश्वत
- (iv) जिसकी स्त्री सुन्दर हो - सुशील
- (v). जो अमिष (मांस) नहीं खाता - निरामिष
- (vi). जो मृत्यु के समीप हो - मरणासन्न
- (vii). जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो - अजातशत्रु
- (viii). जो किये गये उपकार को नहीं मानता - कृतघ्न
- (ix). कठिनाई से समझने योग्य - दुर्बोध
- (x). विदेश में बाल करने वाला - प्रवासी

PCS (Lower) 2008

- (i) जो वेतन लिए बिना कार्य कर रहा हो - अवैतनिक
- (ii) जो किसी के खर्ची में कार्य कर रहा हो - कार्यवाहक
- (iii) जो उच्च पद पर होने के कारण किसी कार्य में रह हो - पदेन
- (iv) जो कुछ समय के लिए नियुक्त किया गया हो - तदर्थ
- (v) जो आधी खराब तक काम करता है -

PCS (Lower) 2006 spl.

- ✓ (i) जिसने छोड़ न जा सके - उत्थाप्य
- (ii) जो आँखों से खुला हो - पशुधवा
- (iii) जो पेट के बल चलता हो - उदरचर
- (iv) जिसका किसी तरह उलंघन न किया जा सके - अनुलंघनीय
- ✓ (v) जिसका उत्तर न दिया जा सके - अनुत्तरित

PCS (Lower) 2004

- (i) जिसने स्तब्ध न खड़ा रहा हो - किंकर्ण्यविमूढ़
- (ii) सौ वर्षों का समूह - शताब्दी
- (iii) दो प्रिन्स ब्राह्मणों के बीच मध्यस्थता करने वाला - दुम्राधिया
- (iv) विष्णु का उपासक - वैष्णव
- ✓ (v) गौद लिया हुआ - दत्तक

PCS (Lower) 2003

- (i) जानने की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु
- (ii) जिसकी आशा न की गई हो - अप्रत्याशित
- (iii) जो युद्ध में स्थिर रहता है - युधिष्ठिर
- (iv) जो अच्छे कुल में उत्पन्न हो - कुलीन
- (v) जो हल्की कविता रचती है - कवयित्री

PCS (Lower) 2002

- (i) जिसने क्षमा न किया जा सके - अक्षम्य
- (ii) जिस पर मुकदमा चला रहा हो - प्रसिवादी

- ✓ (iii). छथ ले पुस्तक की लिखी प्रति - पाण्डुलिपि
- (iv). बारह ले सौलह वर्ष की आयु की कन्या - किशोरी
- (v). जिसका कोई शत्रु न हो - निःशत्रु

PCS (Lower) 2002 spl.

- (i). जो धरती फोड़कर जन्मता हो - उद्गभिज
- ✓ (ii). जो पराये की हित चाहता हो - परोपकारी
- (iii). जो बहुत आसुरी जानता है - बहुआसुरिदू
- (iv). जो पहले कभी नहीं रुना गया - अश्रुतर्ष्व
- (v). जो व्याकरण जानता है - वैयाकरण

Lower : 1998

- (i). आकाश चुम्बने वाला - गगनचुम्बी
- (ii). जो भेदा न जा सके - अभेद्य
- (iii). जो कम बोलने वाला हो - मितभाषी
- (iv). जिससे बैतन न मिलता हो - अपैतनिक
- (v). जंगल में लगी हुई आग - दावानल

PCS (Lower) : 1990

- (i). जिसने उधार लिया हो - ऋणी
- ✓ (ii). जो बदला न जा सके - अपरिवर्तनीय
- (iii). जहाँ सेना रहती हो - द्वावनी
- (iv). जो नीतिवान हो - नीतिज्ञ
- (v). जहाँ आबादी न हो - निर्जन
- (vi). जो विश्वास करने लायक न हो - आविश्वासनीय
- (vii). जो मवन गिर गया हो - खण्डहर
- (viii). जो ईश्वर में विश्वास रखता हो - आस्तिक
- (ix). जिसमें उत्साह न हो - निरुत्साही
- (x). जो अधिक बोलता हो - वाचात्र
- (xi). जिसके थिर पर मल न हो - गंजा

PCS (Lower) 1975

- (i) सरलता से प्राप्त होने वाला - सुलभ
- (ii) सबको समान भाव से देखने वाला - समदर्शी
- (iii) कष्ट सहकर होने वाला कार्य - दुष्कर
- (iv) बहुत कम बोलने वाला - मितभाषी
- (v) जिस पुरुष का स्वर्णवास हो गया हो - स्वर्णीय
- (vi) आकाश में विचरण करने वाला - नभचर
- (vii) दो आधरुँ बोलने वाला - द्विभाषी

LDA/UDA - 2010

- (i) खाद्य सामग्री जो यात्रा के समय रास्ते में उपभोग के लिए दी जाती है - पाद्येय
- (ii) आधी रात का समय - त्रिशिथ
- (iii) जिसके पास कुछ न हो - अकिंचन
- (iv) जिसने बुलाया न गया हो - अनाहूत
- (v) मोक्ष की इच्छा रखने वाला - मुमुक्षु
- (vi) रंगमंच के पर्दे के पीछे का स्थान - नेपथ्य
- (vii) हवन में जलाने वाली लकड़ी - सामिधा
- (viii) दिखाएँ ही जिनका वस्त्र हो - दिगंबर
- (ix) जिसका जन्म कन्या के गर्भ से हुआ हो - कानीन
- (x) चेत की आग्नि - जठराग्नि

LDA/UDA - 2006

- (i) जिसका शत्रु जन्मा ही न हो - अजातशत्रु
- (ii) शब्द ग्रा जो व्यक्त न हो सके - अव्यक्त
- (iii) साँझ व रात्रि के बीच का समय - गोधूलि
- (iv) जिसके मध्य में शूल हो - शूलपाणि
- (v) जो सब कुछ जानता हो - सर्वज्ञ

अव्यक्त
अकथनीय
अनिवर्त्तनी

APO: 1994

- (i). अच्छी आँखों वाली स्त्री - सुनैना
- (ii). अपनी इच्छा से आचरण करने वाला - स्वेच्छाचारी
- (iii). एक माँ के पेट से उत्पन्न - सहोदर
- (iv). कम खाने वाला - अल्पाहारी
- (v). जहाँ तक संभव हो - यथासंभव

APO: 1988.

- (i). किये गये उपकार को मानने वाला - कृतज्ञ
- (ii). जो अनुकरण करने योग्य हो - अनुकरणीय
- (iii). कम बोलने वाला - मितभाषी
- (iv). जिसका यश चारों ओर फैल गया हो - यशस्वी
- (v). पैर से लेकर सिर तक - आपादमस्तक

APO: 1982

- (i). किये गये उपकार को न मानने वाला - कृतघ्न
- (ii). जिसकी तुलना न की जा सके - अनुलनीय
- (iii). स्वयं से उत्पन्न होने वाला - स्वयंभू
- (iv). आकाश को छूने वाला - गगनस्पर्शी
- (v). जिसका कोई शत्रु न हो - निःशत्रु
- (vi). जिसने मृत्यु पर विजय पायी हो - मृत्युंजय

(vii). जो शमा करने योग्य नहीं है - अशम्य

(viii). पश्चिम व उत्तर दिशाओं का मध्यस्थ कोण - बायव्य

AP0: 2006

(i). जिसकी चार भुजाएँ हो - चतुर्भुज

(ii). जानने की इच्छा - जिज्ञासा

(iii). दो बार जन्म लेने वाला - द्विज

(iv). भविष्य में होने वाला - भविष्य

(v). जो युद्ध में स्थिर रहता हो - युधिष्ठिर

AP0: 2002

(i). जिसके पास कुछ न हो - अकिंचन

(ii). जिस पर आक्रमण किया गया हो - आक्रांत

(iii). जिसकी पत्नी मर गई हो - विधुर

(iv). जो आँखों के आगे उपास्थित हो - प्रत्यक्ष

(v). जो मरने का इच्छुक हो - मुमूर्षु

AP0: 1997

(i). गुरु के दक्षिण रहने वाला विद्यार्थी - अंतेवासी

(ii). जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली हो - प्रतिष्ठित

(iii). जीने की इच्छा - जिजीविषा

(iv). जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न किया जा सके - अतीन्द्रिय

AP0: 1996

(i). जिसकी शीवा सुन्दर हो - सुशीव

(ii). दो बार जन्म लेने वाला - द्विज

(iii). जो शमा पाने लायक है - शम्य

(iv). जिसके चार पैर हैं - चतुष्पद

(v). जो कुछ नहीं जानता - अज्ञ

LDA/ UDA : 1995

- (i). जिसका कोई आलु न हो- निःशलु
- (ii). जो वचन या वाणी शरा न कहा जा सके- अनिवर्चनीय
- (iii). बिना पलक गिराये डुल- सन्निमेष
- (iv). पुग्ने तक बाँधु वाला- अजानबाहु
- ✓ (v). जिसका इन्दिमों डरा अनुभव न हो सके- अगोचर
- ✓ (vi). जो सबको समान रूप से देखता हो- समदर्शी
- (vii). जो भेदा या लोड़ा न जा सके- अभेद्य
- (viii). प्रिय वचन बोलने वाली स्त्री- प्रियंवदा
- (ix). जिसके पार न देखा जा सके- अपारदर्शी
- ✓ (x). जिसका दमन करना कठिन हो- दुर्दम्य

SDI : 2008

- (i). जिसके पास कुछ भी न हो- अकिंचन
- ✓ (ii). निम्न जाति में जन्म लेने वाला- अंत्यज
- (iii). अनिर्णीत जीविका- आकाशवाहि
- (iv). जिस पर हमला न किया गया हो- अनाक्रांत
- (v). जो बहुत मन्द गति से कार्य करता हो- दीघसूत्री
- (vi). उचित-अनुचित का ज्ञान रखने वाला- विवेकी
- (vii). जो अपने कर्तव्य का निश्चय न कर सके- किंकर्तव्यविमूढ़
- (viii). अनेक युगों से चला आने वाला- सनातन
- (ix). ऐसा कवि जो तत्काल कविता रचित करता हो- आशुकवि

NT : 2006

- (i). जिसकी आशा न की गई हो- अप्रत्याशित
- (ii). जिस पर उपकार किया गया हो- उपकृत
- (iii). युगों से चला आने वाला- सनातन
- (iv). जिसे बुझाया न आये- अजर
- (v). जिसे ईश्वर में विश्वास है- आस्तिक
- (vi). जो व्याकरण जानता है- वैयाकरण

निबन्ध (Essay)

अंक - $50 \times 3 = 150$

समय - तीन घंटा

शब्द सीमा - प्रत्येक, अधिकतम - 700

खण्ड (क) : 1. साहित्य एवं संस्कृति

2. सामाजिक - श्रमवादाचार, आत्मवाद, अस्तवाद, साम्प्रदायिकता, महिला सशक्तिकरण, जनलोकपाल, न्यायिक साक्ष्यता, रचना का अधिकार ... etc.

3. राजनीतिक क्षेत्र

खण्ड (ख) : 1. विज्ञान, पर्यावरण एवं तकनीकी

2. आर्थिक क्षेत्र

3. कृषि, उद्योग एवं व्यापार

खण्ड (ग) : 1. राष्ट्रीय / अन्तराष्ट्रीय घटनाक्रम : समसामयिकी

2. प्राकृतिक आपदाएँ : बाढ़, सूखा, भूस्खलन, शकंप, सुनामी etc.

3. राष्ट्रीय विकास : योजना / परियोजना

अंक निर्धारण : — विषय सामग्री - 30
भाषा - 10
शैली - 10 } Out of 50

Def: निबन्ध विचारों, उद्धरणों एवं कथाओं का मिश्रण है।

विशेषताएँ - (i) व्याक्तित्व की अभिव्यक्ति

(ii) संक्षिप्तता

(iii). प्रवाह

(iv) संपूर्णता

निबन्ध के प्राहप / अंग :-

1. प्रस्तावना :- विषय से परिचय
आकर्षक, लाघाजित, सम्मानपूर्ण
अनावश्यक विस्तार नहीं
2. प्रतिपादन :- विषय का क्रमिक इच्छियों में विभाजन
विभाजित विद्गुओं का अंखलाबद्ध, तर्कशरी प्रस्तुति
विषय को रोचक बनाने के लिए - उद्घरण, उदाहरण, कविता, सुक्तियां
नये तथ्य, विचार, तर्क नये पैरा से
3. उपसंहार :- चरम अवस्था
प्रतिपादित विषय का सार
पाठक पर हाप होने वाला

सावधानियां :-

1. निबन्ध को श्लोक, गीत, कविता से नहीं शुरू करना है, यदि देना चाहें तो बीच में।
2. उद्घरण, उदाहरण, मुठावरे, लोकोक्तियां डेनी है।
3. Heading कभी नहीं
4. Numbering कभी नहीं
5. कई कारण है तो para wise
6. एक para maximum 60 words का
7. अंतिम para 125-130 words का
8. निष्कर्ष में हमेशा अपना सुझाव - 'positive'

नमामि गंगे

महत्त्व

↓
इषण का कारण

↓
दुष्परिणाम

↓
रोकने के उपाय

↓
समेकित प्रयास

↓
सरकारी प्रयास

↓
वर्तमान सरकार द्वारा प्रयास

माँ के रूप में आदर पाने वाली गंगा नदी अपने देश की अमृत रेखा मानी जाती है। गंगा नदी का न सिर्फ आर्थिक महत्व है, बल्कि हमारे धार्मिक श्रद्धा तथा संस्कृति का भी प्रतीक है। हिन्दू धर्म में गंगा नदी को देवी का रूप माना गया है। पौराणिक ग्रन्थों में गंगा नदी को अत्यन्त पवित्र माना गया है। ऐसी मान्यता है कि इस नदी के पवित्र जल में स्नान करने से सारे पाप धुल जाते हैं। कोई भी हिन्दू संस्कार व उत्सव बिना दो बूँद गंगा जल के पूर्ण नहीं होता। धार्मिक व अध्यात्मिक रूप से इतनी महत्ता होने के बावजूद आज गंगा नदी का अस्तीत्व संकट में है। भारत की 43% जनसंख्या गंगा नदी के प्रवाह क्षेत्र में रहती है। 10 लाख वर्ग किमी से अधिक बेसिन वाली गंगा नदी सदियों से विशाल जनसंख्या का भरण-पोषण करती आई है। वर्तमान समय में 50 करोड़ की जनसंख्या किसी न किसी रूप में गंगा नदी से जुड़ी है। आर्थिक रूप से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हुए हम सभी ने इस नदी को गंभीर रूप से प्रदूषित किया है और इसके अस्तीत्व पर संकट मँडरा रहा है।

गंगा नदी के प्रदूषित होने का प्रमुख कारण मानव तथा घरेलू अपाश्रितों का इस पवित्र नदी में प्रवाहित करना है। लगभग 30 बड़े शहर तथा 40 छोटे शहर व कस्बे इस नदी के तट पर बसे हैं जो प्रतिदिन लाखों लन गन्दगी इस नदी में प्रवाहित करते हैं। इसके अलावा हजारों की संख्या में दोपे-बड़े उद्योग अतनाक रसायनों को इस नदी में प्रवाहित करते हैं। धार्मिक कारणों से भी पवित्र नदी होने के कारण मोक्ष की प्राप्ति हेतु शवदाह, आस्थिकलण, प्रजा-पाठ के अवशेष, मूर्तियों आदि प्रवाहित की जाती है। केवल इलाहाबाद में माघ मेलों में पवित्र स्नान करने हेतु 4 करोड़ लोग आते हैं जो स्नान के साथ-2 अन्य प्रकार की गन्दगी भी फैलाते हैं। जगह-2 बंध बनाये जाने के कारण भी इस नदी

प्रवाह की तीव्रता में कमी आयी है।

आज पवित्र गंगा जल कहे भर को पवित्र रह गया है। टकीकत यह है कि यह पवित्र जल पीने योग्य तो इतना दूषित करने योग्य नहीं रह गया है। आज गंगा नदी का BOD सामान्य से (66)% अधिक है। कानपुर में कोमिथम की मात्रा सामान्य से 70 गुना अधिक है। पोर की मात्रा 80% से अधिक है। गंगामल में इतने खतरनाक रसायन व अजैविक तत्व भुल गये हैं कि इनमें रहने वाले जलीय जीव मछलियों, डाल्फिनो आदि का जीवन संकट में है। एक अध्ययन में पाया गया है कि इस नदी के आस-पास रहने वाले लोगों को अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा पेचिस, कालरा, डायरिया, डिपेण्डरिक्स, कैंसर जैसी घातक बीमारियाँ का खतरा अधिक रहता है। बड़े-बड़े बाँध बनाये जाने के कारण गंगा नदी की धारा की तीव्रता में कमी आई है। आसपास के घासों टेक्टेपर जंगल तथा भूमि जलमयन हुई है जिससे वन्य जीवों तथा मानव बसाव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। भूकंप तथा संचानक बरफ का भी खतरा बना रहता है।

दैवीय आस्था की सतीक, माँ के रूप में प्रसिद्ध पवित्र गंगा नदी जो करोड़ों लोगों की भरण-पोषण कर रही है, हम सबको मिलकर प्रदूषण मुक्त करना होगा। बड़े-बड़े शहरों से गंदे नालों, खींचेन आदि से बाहर मल को सीधे गंगा नदी में न डालकर इन्हे शुद्धीकरण करने के पश्चात् ही साफ पानी को रोड़ना चाहिए। चीनी मिल, चमड़ा उद्योग, इन्ड्रखाने आदि से निकलने वाले खतरनाक रसायन व गंदे जल को गंगा नदी में सीधे प्रवाहित करने पर सख्त प्रबिन्ध होना चाहिए। विद्युत शक्ति गृहों की स्थापना, आर्थिक लक्ष्य को बढ़ाना प्रतीक मात्र तथा शमा-पाठ के अवशेषों व मूर्तियों को प्रवाहित करने पर सख्त प्रबिन्ध होना चाहिए। बड़े-2

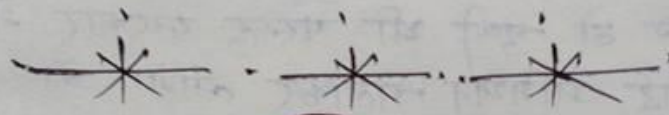
बाँधों से भी बचना होगा जिससे गंगा नदी अपने प्राकृतिक रूप में प्रवाहित हो सके।

गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए मीडिया, स्वयंसेवी संस्थाओं, बुद्धिजीवियों को भी आगे आना होगा। दूंगोपेठियों, व्यापारमालाओं, सोमिनारों का भी आयोजन होना चाहिए। गंगा के आस-पास रहने वाले लोगों में जागरूकता फैलानी होगी। ज्वारण के तौर पर ब्रिटेन के टेम्स नदी को लिया जा सकता है जिसे वहाँ फादर का दर्जा प्राप्त है। कुछ समय पहले यह नदी अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी थी परन्तु सरकार ने बृहद पैमाने पर सफाई अभियान चलाकर लोगों को जागरूक किया। आज इस नदी में एक भी त्रिका डालना ब्रिटेन नामी पाप समझते हैं और आज विश्व की सर्वाधिक प्रदूषण मुक्त नदियों में से एक है।

गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए सबसे पहले गंधीरूपाल 1985 में गंगा रक्षकान् प्लान के तहत शुरु किया गया। दो चरणों में चलने वाले इस अभियान में कुल 1400 करोड़ रुपये खर्च हुए परन्तु अपेक्षित सफलता न मिलने पर इसे 2003 में बन्द कर दिया गया। 2009 में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गंगा नदी बेधिन प्राधिकरण का गठन किया गया तथा गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी घोषित किया गया। इस योजना के तहत लगभग 850 करोड़ रुपये खर्च करने का प्रावधान किया गया।

हाल में ही सुप्रीमकोर्ट ने केन्द्र को एक समय सीमा के तहत गंगा को प्रदूषण मुक्त करने का आदेश दिया है। नई सरकार जो गंगा नदी को सुप्रीमकोर्ट के तहत लाने के बाद ही अपने पहले ही कगार में 2037 करोड़ रुपये को खर्च कर गंगा को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए नमामि गंगे नाम से योजना का

प्रारंभ किया है तथा इसके लिए एक अलग मंत्रालय
 का भी गठन किया गया है। गंगा नदी को प्रदूषित
 करने वाले तत्वों पर कड़ी नज़र रखने के लिए 'गंगा
वाहिनी' नामक स्नैपशूटिंग दलों को तैयार करने की भी
 घोषणा की गई है। वास्तव में यह प्रयास सामूहिक
 रूप से होना चाहिए जिसमें जन-जन की सहभागिता
 अपेक्षित है तभी गंगा को प्रदूषण मुक्त बनाया जा
 सकता है।



भूमिका/महत्व



प्रदूषण का कारण



दूषण विनाश



रोकने के उपाय



स्वरक्षी प्रयास



वर्तमान स्वरक्षी प्रयास

MS (Upper) (20) Marks

सरकारी पत्र
अर्द्ध सरकारी पत्र
कार्यालय आदेश
साधु सूचना
परिपत्र

पत्र-लेखन

8X3 = (24) Marks
Lower (2)
40/DO/00
Circular Notification

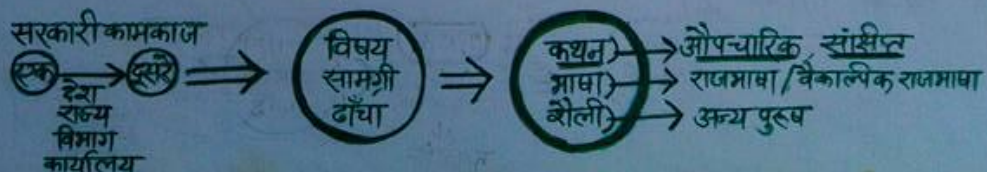
सरकारी / शासकीय / राजकीय / शासनादेश [Official Letter / Government Order - G.O.]

सरकारी कामकाज से सम्बन्धित पत्र सरकारी पत्र कहलाते हैं। यह एक देश की सरकार द्वारा इसरे देश की सरकार को, केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकार को, राज्य सरकार द्वारा केन्द्र अथवा अन्य राज्य सरकारों को, एक सरकारी विभाग द्वारा इसरे सरकारी विभाग को, एक कार्यालय द्वारा इसरे कार्यालय को भेजा जाता है। इनमें सरकार के किसी निर्णय, नीति निर्धारण, समस्या निदान आदि को विषय बनाया गया होता है।

सरकारी पत्र इसी तरह से औपचारिक होते हैं; इसमें व्यक्तिगत पहलिय की अवलोक विलकुल नहीं होती। यह एक निश्चित ढाँचे में ढला होता है। इसकी समस्त सामग्री यथार्थ परक तथ्यों, नियमों, उपनियमों से बंधा होता है। पत्र में लेखक की कोई अपनी बात न हो कर तर्क संगत एवं विधि संगत कथन मात्र होता है। साक्षितता सरकारी पत्रों की सीढ़ है। प्रायः औपचारिक, तथ्य परक, स्पष्ट एवं सर्वथा शुद्ध होता है। यह राजभाषा या वैकल्पिक राजभाषा में लिखा होता है। यह सर्वत्र अन्य पुरुष शैली में लिखे जाते हैं। इनमें एक आदेश या दखना एक पैराग्राफ में लिखा जाता है इसरा आदेश या दखना संख्या - डालकर इसरे पैराग्राफ से लिखा जाता है।

विशेषताएँ:-

- (i) सरकारी पत्र सरकारी काम-काज से सम्बन्धित होते हैं।
- (ii) यह एक देश की सरकार द्वारा दूसरे देश की सरकार को, केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकार, राज्य सरकार द्वारा केन्द्र सरकार या अन्य राज्य सरकार, एक सरकारी विभाग या कार्यालय द्वारा दूसरे सरकारी विभाग या कार्यालय को लिखा जाता है।
- (iii). इनमें सरकार के किसी निर्णय, नीति निर्धारण या समस्या निदान को विषय बनाया गया होता है।
- (iv) यह इसी तरह से औपचारिक होते हैं, इसमें व्यक्तिगत परिचय की झलक बिल्कुल नहीं होती।
- (v). यह एक निश्चित ढाँचे में ढलता होता है।
- (vi). इसकी समस्त सामग्री यथार्थपरक तथ्यों, नियमों, उप-नियमों से बँधा होता है।
- (vii). पत्र में लेखक की कोई अपनी बात न हो कर तर्क-संगत एवं विधि संगत कथन मात्र होता है।
- (viii). संक्षिप्तता सरकारी पत्रों की सीढ़ है।
- (ix). भाषा औपचारिक, तथ्य परक, स्पष्ट एवं सर्वथा शुद्ध होता है।
- (x). यह राजभाषा / वैकल्पिक राजभाषा में लिखा होता है।
- (xi). यह सदैव अन्य पुरुष शैली में लिखे जाते हैं (मुझे यह सूचित करने का निर्देश हुआ है कि...)
- (xii). एक आदेश या सूचना एक पैराग्राफ में दूसरा आदेश या सूचना संपूर्ण उठाकर दूसरे पैराग्राफ से लिखा जाता है।



महत्त्व :-

- (i). समस्त सरकारी क्रिया-कलाप, शासनादेखा सरकारी पत्रों पर ही निर्भर होते हैं।
- (ii). सरकारी पत्र समस्त सरकारी क्रिया-कलापों को वैधानिक आधार देते हैं।
- (iii). श्रविष्य के लन्दर्भ में दस्तावेजीकरण का आधार होता है।

प्रमुख अंग :-

1. पत्र संख्या, अनुभाग, वर्ष
2. विभाग/ कार्यालय
3. स्थान, तिथि
4. प्रेषक
5. प्रेषित
6. विषय
7. संबोधन
8. मुख्य भाग
9. समापन
10. पृष्ठांकन

प्रेषक

पत्र सं०- J-14/78

क.स.ग.

सचिव, गृह मंत्रालय

भारत सरकार

सेवा में,

मुख्य सचिव

उत्तर प्रदेश शासन

लखनऊ

विज्ञ (संसाधन) अनुभाग

नयी दिल्ली, 30 अगस्त 2014

विषय : बाढ़ पीड़ितों के सहायता के सम्बन्ध में।

महोदय,

मुझे सूचित करने का निदेश हुआ है कि भारत सरकार ने राज्य में बाढ़ पीड़ितों को सहायता देने हेतु उत्तर प्रदेश सरकार को पंच सौ करोड़ रुपये का विशेष पैकेज स्वीकृत किया है, जिसे उत्तर प्रदेश शासन को प्रेषित दिया जा चुका है। भारत सरकार इसकी प्रगति के साथ-साथ व्यय का अनुमान भी चाहती है।

कृपया 30 सितम्बर, 2014 तक संशर्ष सूचना से अवगत करें।

भवदीय

ह० - - - - -

(क.स.ग.)

सचिव, भारत सरकार

सं०- J-14/78, दिनांक 30 अगस्त 2014

उपर्युक्त की प्रतिलिपि निम्न लिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. समस्त सचिव, भारत सरकार
2. मुख्य सचिव, उ०प्र० शासन

आशा से

ह० - - - - -

(अ. व. स.)

संयुक्त सचिव, भारत सरकार

प्रारूप

प्रेषक

पत्र सं० ...

क.ख.ग.

सेवा में,

अ.ब.स.

अनुभाग.....

स्थान..., दिनांक...

विषय ...

महोदय,

प्रवर्दीय

(.....) हस्ताक्षर

..... पदनाम

सं० दिनांक ...

उपर्युक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ तथा
आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :—

1 ...

2 ...

3 ...

आज्ञा ले

(.....) हस्ताक्षर

..... पदनाम

अर्द्ध-सरकारी पत्र

[Semi-official Letter- D.O]

1. अर्द्ध-सरकारी पत्र, किसी सरकारी अधिकारी द्वारा अन्य सरकारी अधिकारी / कर्मचारी / गैर सरकारी व्यक्ति को सरकारी कार्य के सन्दर्भ में किसी खास मामले की ओर ध्यान आकर्षित करने, विचार-विमर्श, सहमति, स्पष्टीकरण, सूचनाओं के आदान-प्रदान आदि हेतु व्यावहारीक स्तर पर लिखे जाते हैं।
2. सरकारी कार्य के सन्दर्भ में होने के बावजूद पत्र का स्वरूप व्यावहारीक तथा अनौपचारिक होता है।
3. इसे प्रायः समान स्तर के अधिकारी को ही लिखा जाता है।
4. अर्द्ध-सरकारी पत्रों की भाषा सरकारी पत्रों की तरह आदेशात्मक या अनौपचारिक नहीं होती, बल्कि आग्रह परक मिलान-जालीय दंग की होती है।
5. इसमें आभेवादन, सन्बोधन का विशेष महत्व होता है तथा पत्र प्रिय से आरंभ होता है।
6. अर्द्ध-सरकारी पत्र कभी-2 गोपनीय होते हैं।
7. इसमें सरकारी पत्रों की तरह संलग्नक या पृष्ठांकन नहीं होता।
8. अर्द्ध-सरकारी पत्रों में लिकाफे का विशेष महत्व होता है क्योंकि इसी पर अर्द्ध-शासकीय पत्र होने का संकेत होता है, जिससे संबोधित व्यक्ति द्वारा खोले जाने की शर्त पूरी होती है।
9. कुछ कार्यालयों में अर्द्ध सरकारी पत्रों हेतु पैड दिये होते हैं।

क. ख. ग.
जिलाधिकारी
इलाहाबाद

अर्द्ध-शासकीय प० सं० - J-14/78
जिलाधिकारी कार्यालय
इलाहाबाद, 15 दिसम्बर 2014

प्रिय अ. व. स. जी !

जनसभा
जनवरी ^{PM} 2015 में होने वाले कुंभ मेले के
दौरान बड़ी संख्या में प्रहलुओं के उपास्थिति के कारण परिवहन
कानून व्यवस्था सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श
हेतु आप कार्यालय पर आ जायें।

आपका भवानीष्ठ

(क. ख. ग.)
जिलाधिकारी
इलाहाबाद

प्रति:-

श्री अ. व. स.
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक
इलाहाबाद

प्रेषक,

क. ख. ग.

सचिव, खाद्य एवं आर्थिक
उत्तर प्रदेश शासन

सेवा में,

समस्त जिलाधिकारी

उत्तर प्रदेश शासन

अनुभाग-2

लखनऊ, 20 दिसम्बर 2014

विषय : खाद्यान्नों की बट्टली के सम्बन्ध में
महोदय,

मुझे यह सूचित करने का निर्देश हुआ है कि राज्य में खाद्यान्नों की वर्तमान स्थिति देखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने यह निश्चय किया है कि अन्न बाहुल्य जिलों में खाद्यान्नों की बट्टली की जाय। निर्धारित खाद्यान्न की मात्रा व बट्टली के खाद्यान्न की कीमत के सम्बन्ध में विस्तृत सूचना पीछे प्रेषित की जायेगी।

इस सम्बन्ध में जो भी कार्यवाही करें उसका तथा खाद्यान्न बट्टली की प्रगति का विवरण इस विभाग के प्रेषित रहें।

भवदीय

हं० -----

(क. ख. ग.)

सचिव, उ० प्र० शासन

सं० - J-14/78, दिनांक : 20 दिसम्बर 2014

उपर्युक्त की प्रतिलिपि निम्नालिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित : —

2. प्रमुख सचिव, उ० प्र० शासन
3. समस्त जिलाधिकारी, उ० प्र० शासन

आज्ञासे

हं० -----

(ज. व. स.)

संयुक्त सचिव, उ० प्र० शासन

लोक सेवा आयोग, ३० प्र०

सं० - A-1/J-14/2015

इलाहाबाद, 25 जुलाई 2015

कार्यालय आदेश

शासन द्वारा यह जानकारी हुई है कि लोक सेवा आयोग की परीक्षा को सुचारु ढंग से निश्चित तिथि पर करने के लिए आयोग के कर्मचारियों की स्तरीयतात्मक अवकाश के दिन होने वाली हुई निरस्त की जाती है। इसके परिणाम में कर्मचारियों को उचित पारिष्पतिक शासन द्वारा प्रदान किया जायेगा। अतः समस्त कर्मचारियों को स्तरीयतात्मक अवकाश के दिन आयोग के कार्यालय आना अनिवार्य है।

ह० -

(क. ख. ग)

सचिव

सं० - A-1/J-14/2015, इलाहाबाद, 25 जुलाई 2015
उपरोक्त की प्रतिलिपि लोक सेवा आयोग के समस्त कर्मचारियों को सूचनार्थ व अनुपालनार्थ प्रेषित।

आज्ञा से

ह० -

(अ. व. ख)

संयुक्त सचिव

कार्यालय आदेश [Office - Order]

1. यह कार्यालय के आन्तरिक प्रशासन से सम्बन्धित होगा है। इसके माध्यम से अर्थात् कर्मचारियों को नियमों, रखनाओं, आदेश, चेतावनी, अपील, स्थानान्तरण, अवकाश स्वीकृति, दस्तावेज रखना, निराश्रित पंजीक में खिलाफ रिपोर्ट, काम का बंटवारा, नये पदों की स्वीकृति आदि की जाती है।
2. इसका प्रभाव कार्यालय विशेष तक सीमित होगा है।
3. उल्लंघन की अवस्था में अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाती है।
4. सदैव सरकारी प्रायोजनार्थ प्रयुक्त होगा है।
5. विषय आदेश परक, बहुनिष्ठ, यथा संभव संक्षिप्त होगा है।
6. अराजक कर्मचारियों के लिए प्रयुक्त होगा है।
7. रखना होने के कारण प्रतिभार की अपेक्षा नहीं होती।
8. दिशा उपर से नीचे होगा है।
9. भाषा राजभाषा / वैकल्पिक राजभाषा होगा है।
10. शैली उत्तम पुरुष होती है।

महत्त्व :-

- (i) कार्यालय आदेश कार्यालय स्तर पर शीघ्र रखना संश्लेषण का सार्थक माध्यम होता है।
- (ii) सरकारी क्रिया-कलापों की निरन्तरता सुनिश्चित होती है।
- (iii) कार्यालय स्तर पर अनुशासन बनाये रखने के लिए सार्थक प्रयोग होता है।

उत्तर प्रदेश शासन

नियुक्ति अनुभाग-4

सं-5-4/78

लखनऊ, 20 अप्रैल 2012

आपिसूचना

(नियुक्ति)

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सम्मिलित प्रकार अधीनस्थ सेवा परीक्षा, 2011 के परिणाम के आधार पर निम्नालिखित सफल अभ्यर्थियों को न्यूनतम 15600-39100 ग्रेड पे 5400 पर उप जिलाधिकारी के लिखित स्थायी पदों पर परीक्षा की परीक्षा पर रखे जाने हेतु चयन किया जाता है :—

सर्वश्री

1. (अनुक्रमांक)
2. (अनुक्रमांक) ...)
3. (अनुक्रमांक... ..)
4. (अनुक्रमांक... ..)
5. (अनुक्रमांक... ..)

उपर्युक्त चयनित अभ्यर्थियों के पक्ष में आवश्यक नियुक्ति एवं तैनाती विषयक आदेश शासन द्वारा अलग से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से भेजे जा रहे हैं।

हं...
(क.व.ग.)
सचिव

सं-5-14/78 दिनांक 20 अप्रैल 2012

उपर्युक्त की प्रतिलिपि निम्नालिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :—

- (i) निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ० प्र०
- (ii) समस्त चयनित अभ्यर्थीगण
- (iii). सचिव, लोक सेवा आयोग उ० प्र०, इलाहाबाद

आज्ञा से
हं...
(अ.व.स.)
संयुक्त सचिव उ० प्र० शासन

विज्ञापि/आधीस्त्रचना [Notification]

1. उच्च पदों की ओर से निर्गमित पत्र जिसमें नये नियमों, विनियमों, अधिनियमों, आदेश, नियुक्ति, स्थानान्तरण, सेवा निवृत्ति आदि की स्त्रचना होती है।
2. सर्वोच्च पद से लिखे जाने के कारण औपचारिक शब्दों का प्रयोग
3. विषय बहुनिष्ठ, संक्षिप्त तथा एकार्थी होता है।
4. स्त्रनार्थ होने के कारण प्रतुस्तर की अपेक्षा नहीं।
5. दिशा सदैव उपर से नीचे
6. भाषा राजभाषा / वैकाल्पिक राजभाषा
7. शैली अन्य पुरुष
8. विज्ञापि (Notification) तथा प्रेस विज्ञापि (Press Note) में अन्तर होता है। प्रेस विज्ञापि में सामान्य स्तर की स्त्रचना सार्वजनिक महत्त्व की होती है, जिले जनसामान्य के लिए दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित की जाती है। जबकि विज्ञापि विशेष महत्त्व की होती है तथा सरकारी कामकाज से सम्बन्धित होती है, इसका प्रकाशन सरकारी गजट में होता है।

महत्त्व :—

- (i) आधीस्त्रचनाओं के माध्यम से ही विशिष्ट सरकारी स्त्रचनाओं को अधिकृत स्त्रचना में परिवर्तित किया जाता है।
- (ii). गजट (राजपत्र) में प्रकाशित कर भविष्य के लिए सन्दर्भार्थ संरक्षित किया जाता है।
- (iii) राजपत्रित आधीकारियों का सेवा विवरण आधीस्त्रचना के माध्यम से ही सुनिश्चित की जाती है।

परिपत्र (Circular)

- Def. यह सरकारी पत्र का ही एक रूप है। जब विषय एक हो, प्रेषक एक हो, परन्तु पाने वाला अलग-अलग तथा अनेक हों, तो सरकारी पत्र ही परिपत्र बन जाता है।
- कार्यालयी भाषा में इसे गल्ली चिट्ठी भी कहते हैं। किसी कार्यालय द्वारा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को परिपत्र जारी करते समय उसके साथ एक साथ पुण्ड भी नथी कर दिया जाता है जिस पर समस्त कर्मचारियों को सूचना अवगत होने के इलाखर के साथ ही बड़ी लौट आता है जहाँ से निर्गम होता है।
 - इसका प्रायोपन खडेव सरकारी होता है तथा दिशा उपर से नीचे होती है।
 - परिपत्र का ग्राहप एवं रचना खैली सरकारी पत्र जैसा ही होता है।
 - इसमें सूचना, जानकारी या आदेश निर्दिष्ट होते हैं।
 - इसे राजभाषा/ वैकाल्पिक राजभाषा में लिखा जाता है तथा खैली अन्य पुरुष होती है।
 - ये पूरी तरह औपचारिक होते हैं।

महत्त्व :-

- सूचना में एकसुपता बनी रहती है
- इसमें सितव्यधिता के गिनो गुण समप लाधव, अमलाधव, एवं व्यय लाधव पाया जाता है।

Q. No. (4) अ

(10) अंक

Question No (8)

(5) Mark

(Lower में लिखें उपसर्ग)

(आति, सम, उप, उल, प्रति, निर, निस्, दूर, दुस्, अप, परा, आ, ल, वि, प्र, नि)

उपसर्ग एवं प्रत्यय

जना जाई (कृत/कृतं)

मय वाला (गठित)

उपसर्ग-

उपसर्ग दो शब्दों से मिलकर बना है - उप + सर्ग

'उप' का अर्थ है - समीप

'सर्ग' का अर्थ है - सृष्टि

अर्थात् समीप आकर सृष्टि करना

उपसर्ग किसी शब्द से पहले जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं। यह बदलाव तीन प्रकार का होता है :-

(i). प्रतिकूल अर्थ में - निर, अपमान, कुप्यात्, दुष्चरित

(ii). नई विशेषता - प्रहार, उपदेश, उपहार

(iii). तेली लाना - प्रबल, परिभ्रमण, अत्यधिक, अतिवृष्टि

जहाँ संस्कृत में उपसर्गों की संख्या 19

उर्दू में 12 हैं वहीं हिन्दी में 10 हैं। कुछ प्रमुख उपसर्ग निम्न हैं :-

संस्कृत के उपसर्ग :-

(आति, सम, उप, प्रति)

(19)

(निर, निस्, दूर, दुस्, अप, परा)

(आ, ल, वि, प्र, नि)

आति - अत्यन्त, अत्यल्प, अत्याचार, अतिरिक्त, अतिक्रमण, अति

सम - संतोष, संवेदना, संगीत, संचार, संभव, संगम, संदेह, संशुद्धि

उल - इसके कई रूप होते हैं :-

त का (द) - उद्गम, उद्भव, उद्घाटन, उद्देश्य

त का (ल) - उल्लास, उल्लेख, उलंघन

त का (ज) - उज्ज्वल

त का (न) - उन्नति, उन्नायक,

त का (च) - उच्चारण, उच्चाटन, उच्छ्वास

प्रति - प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिक्रिया, प्रतिलिपि, प्रत्यासा, प्रत्यारोप

निर - निर्दोष, निर्माण, निर्जीव, निर्दय, निर्यात, निर्वाह

निस् - निस्तेज, निष्पक्ष, निष्फल, निष्ठुर

दूर - दुर्घटना, दुर्दिन, दुर्बोध, दुर्दशा, दुर्लभ, दुराचार

दुस् - दुस्साहस, दुष्चरित, दुष्कर्म, दुष्प्रभाव

अप - अपमान, अपमर्श, अपव्यय, अपहरण, अपवध, अपकार

परा - पराजय, परामर्श, पराकाष्ठा, पराक्रम

आ - आगमन, आजीवन, आरक्षण, आमरण, आभूषण, आचरण

सु - सुगम, सुगन्ध, सुरक्षा, सुहृद्, सुवाल, सुखेय

स्वागत (सु + आ + गत)

वि - विधेता, विज्ञान, विरोध, विदेश, विफल, विमुख, विधम

प्र - प्रबल, प्रयोग, प्रसिद्ध, प्रचार, प्रदोष, प्रकोप, प्रेरणा

नि - निबन्ध, निबाल, निरोध, निषेध, निकृष्ट, न्यास, निद्रा

हिन्दी के उपसर्ग :- अथ, उन, नि, भर, कु, सु

अथ - अधाखिला, अधमरा, अधपका

उन - (रुक् कम बताने वाला उपसर्ग)

उन्तीस, उन्चाखिल, उनसठ, उन्मादी, उनहन्तर

नि - निडर, निठल्ला, निकम्मा, निरुत्था, निष्ठा, न्यास, निद्रा

भर - भरसक, भरपूर, भरपेट

कु - कुसंग, कुपुत्र, कुबोल, कुमौर

सु - सुपुत्र, सुजान, सुजौल

उर्दू के उपसर्ग :- कम, खुश, ना, ला, बद्, बे, सर, हम

कम - कमबक्त, कमजोर,

खुश - खुशबु, खुशहाल, खुशखबरी, खुशमिजाज

ना - नादान, नाकामिक, नासमझ

ला - लापरवाह, लावारिस, लाइलाज

बद् - बद्नाम, बद्चलन, बद्तमीज, बद्हवास

बे - बेशर्म, बेइमान, बेरहम, बेकसूर, बेइज्जत

सर - सरदार, सरकार, सरपंच, सरलाज

हम - हमराज, हमदर्द, हमलाया

Note: कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनमें एक से अधिक उपसर्ग होते हैं, जैसे :—

स्वागत = रु + आ + गत

उपाध्यक्ष = उप + आधि + अध्यक्ष

व्यवस्था = वि + अव + स्था

Note: उपसर्ग पहचानने के लिए -

८ - वि

रु - र्

अत् - अति

अंत - अन्तः

९ - नि

सं - सम

अश् - अभि

अधो - अधः

१० - श्

प्रत् - प्रति

तद् - तत्

दुश् - दुः

दुर् - दुर्

उल्/उल्/उन्/उल्/उल् उत्

पुन - पुनः

बिन - बहु

भाषा में उपसर्ग का महत्व :-

(i). उपसर्ग नये शब्द बनाने में सहयोग करते हैं।

(ii). भाषा की शब्दावली बढ़ती है।

(iii). विलोम शब्द बनाने में उपसर्ग काही महत्वपूर्ण होते हैं।

(iv). उपसर्ग शब्द के अर्थ ही नहीं बदलते बल्कि उनमें एक नई विशेषता भी लाते हैं जैसे - व्याप्त व प्रवृत्त शब्दों के अर्थ में कोई अन्तर नहीं है लेकिन प्रवृत्त शब्द कहने से एक नई विशेषता दिखने लगती है।

प्रत्यय

प्रत्यय : प्रत्यय किसी शब्द के बाद में जुड़ कर उसके अर्थ में नई विशेषता लाते हैं। प्रत्ययों का संबंध में कोई अर्थ नहीं होगा परन्तु शब्दों से जुड़ने के बाद नई विशेषता लाते हैं।

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं:-

- (i). कृदन्त प्रत्यय :- वे प्रत्यय जो क्रियाओं में लगते हैं उन्हें कृत् / कृदन्त प्रत्यय कहते हैं। - पढ़ + अनीय = पढ़नीय
- (ii). तद्धित प्रत्यय :- वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण आदि में लगते हैं तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। - बुद्धि + मान = बुद्धिमान

संस्कृत के प्रत्यय :-

कृत् प्रत्यय :- अन, अना, अनीय, अक, तव्य, आ, य, त

- अन - पठन, गमन, दर्शन, सहन, कथन, कल्पन, पालन, दान
अना - घटना, रचना, रचना, धारणा, तुलना
अनीय - पढ़नीय, दर्शनीय, गमनीय, पूजनीय, सहनीय, कथनीय
अक - दृक्, नर्तक, पाठक, रश्क, निंदक, आलोचक
तव्य - कर्तव्य, गंतव्य, द्रष्टव्य, वक्तव्य, दातव्य
आ - कथा, चिन्ता, इजा, परीक्षा, कृपा
य - पूज्य, दृश्य, निंद्य, पक्ष्य, श्रव्य
त - ज्ञात, दन्त, गीत, मुक्त, श्रुत, मृत

तद्धित प्रत्यय :- मय, मान, वान, वर्त्ति, वत्, अ, ई, उ, ल

- मय - शान्तिमय, आनन्दमय, प्रेममय, जलमय, ज्योतिर्मय
मान - बुद्धिमान, शक्तिमान, आश्रिमान
वान - स्ववान, मूल्यवान्, बलवान्, धनवान्, विद्यावान्
वर्त्ति - आवर्त्ति, अनावर्त्ति, स्वीभावर्त्ति, अनुवर्त्ति
वत् - पितृवत्, पुत्रवत्, आत्मवत्

- अ - कौशल, गौरव, पौरुष, शैव, दैव
 ई - अनुभवी, उपयोगी, लोभी, विरागी, विरोधी, सहयोगी
 ल - एकल, अनेकल, सर्वल, अन्यत्र
 ता - आधिकता, महानता, प्राचीनता, नवीनता, विशेषता, कुशलता, मुख्यता

हिन्दी के प्रत्यय :-

कृत प्रत्यय :- (आ), (ऊ), (आई), (आहट), (आवट)

- आ - घेरा, झूला, देला, झगड़ा, लपेटा
 ऊ - मारु, खाऊ, लट्ठू, बिगाड़ू, लग्गू
 आई - पढाई, चढ़ाई, खुदाई, जुताई, कमाई, बनवाई, घुलाई
 आहट - घबराहट, चिल्लाहट, लड़खड़ाहट, जगमगाहट
 आवट - सजावट, बनावट, धकावट, रुकावट

तद्धित प्रत्यय :- (आ), (ई), (आहट), (आवट), (इला), (इया), (वाला), (सरा), (हारा)

- आ - झूखा, प्याला, प्यारा, मैला, जोड़ा, बोझा
 ई - खेती, किलानी, चोरी, सवारी, डाकूरी
 आहट - चिकनाहट, कटुवाहट, घबराहट
 इया - रस्तोइया, भोजपुरिया, बम्बईया, गडेरिया
 वाला - दुष्टवाला, लठ्ठीवाला, चायवाला, कारवाला, चलनेवाला
 सरा - चचेरा, ममेरा, फुफेरा
 हारा - लकड़हारा, चूड़ीहार

उद्भूत के प्रत्यय :- (खाना), (दान), (दार), (नाक), (बाज)

- खाना - गुस्तलखाना, पागलखाना, कैदखाना, मयखाना, दवाखाना
 दान - पायदान, इब्रदान, कुड़ादान, फूलदान, खानदान, रक्तदान
 दार - दुकानदार, हवादार, मालदार, ईज्जतदार
 नाक - खौफनाक, दर्दनाक, शर्मनाक
 बाज - चातुर्बाज, सौदेबाज, लट्ठबाज

उपसर्ग तथा प्रत्यय में समानता :- उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों

- (i) नये शब्दों का निर्माण करते हैं।
- (ii). भाषा को समृद्ध तथा शब्दभण्डार बढ़ाते हैं।

उपसर्ग तथा प्रत्यय में अन्तर :-

क्र.सं.	उपसर्ग	प्रत्यय
1.	उपसर्ग मूल शब्द से र्थ लगते हैं।	प्रत्यय मूल शब्द के बाद लगते हैं।
2.	उपसर्ग जुड़ने पर अर्थ विपरित, नई विशेषता आदि हो सकता है।	प्रत्यय जुड़ने पर मूल शब्द के अर्थ से सम्बन्धित ही अर्थ देते हैं।
3.	मूल शब्द उपसर्ग पर निर्भर करते हैं।	मूल शब्द पर प्रत्यय निर्भर करते हैं।
4.	उपसर्ग मूल शब्द को निर्देशित करता है।	प्रत्यय मूल शब्द से निर्देशित होता है।
5.	अधिकांश उपसर्गों का अपना स्वतंत्र अर्थ होता है।	अपवाद स्वरूप ही किसी प्रत्यय का स्वतंत्र अर्थ होता है।
6.	उपसर्ग बहुदिशा गामी होते हैं तथा इनका प्रयोग अपेक्षाकृत कठिन होता है।	प्रत्यय एक रेखीय होते हैं तथा इनका प्रयोग आसान होता है।
7.	उपसर्ग अपेक्षाकृत प्रचुर समाज में अधिक प्रयुक्त होता है।	अपेक्षाकृत सरल समाज में अधिक प्रयुक्त होता है।
8.	उद्भव व विकास की दिशा उपर से नीचे की ओर होता है।	उद्भव व विकास नीचे से उपर की ओर होता है।

Q. No. (5)
(30) अंक

20/4
10 Marks

Question No. (11)
(10) अंक

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

मुहावरा :- मुहावरा बात कहने की एक शैली है। यह अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - संश्लेष करना या बातचीत।
(बुद्धिमान व व्यंजना) द्वारा वह सिद्ध वाक्य जो किसी बोली जाने वाली भाषा में प्रचलित होकर रूढ़ हो गया हो तथा संक्षेप अर्थ के बजाय सांकेतिक अर्थ देता हो।

'मुहावरा' कहलाता है, जैसे - खिन्ही पकाना, लाठी खाना, नाम घरना आदि।

मुहावरो की निम्न विशेषताएँ होती हैं :-

1. मुहावरो का शाब्दिक अर्थ नहीं, बल्कि (सांकेतिक) अवबोधक अर्थ लिया जाता है। जैसे 'खिन्ही पकाना' इसका शाब्दिक अर्थ होगा - खिन्ही बनाना, परन्तु मुहावरे के रूप में सांकेतिक अर्थ होगा - चङ्चल करना।
2. मुहावरे का अर्थ (प्रसंग) के अनुसार होता है, जैसे - 'लड़ाई में खेत जाना' इसका अर्थ है 'युद्ध में शहीद हो जाना' न कि लड़ाई के स्थान पर किसी खेत का चले जाना।
3. मुहावरे का मूल रूप कभी नहीं बदलता अर्थात् मुहावरे का स्वरूप (स्थिर) होता है, अन्यथा मुहावरा नष्ट हो जाता। जैसे 'कमर डटना' एक मुहावरा है इसके स्थान पर 'करीब गंग' शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता।
4. हिन्दी के अधिकांश मुहावरो का स्त्रीया संबंध शरीर के विभिन्न (अंगों) यथा - मुँह, कान, नाक, हाथ, पाँव, जोंघ, स्तिर आदि से होता है, जैसे - मुँह की खाना, कान बड़े होना।
5. मुहावरा भाषा की समृद्धि तथा सम्यक्ता के विकास का (मापक) होता है।

मुहावरो का महत्त्व :-

- (i) भाषा को सजीव बनाते हैं।
- (ii) कथन को प्राणयुक्त एवं प्रभावशाली बनाते हैं।
- (iii) भाषा में सरलता एवं सरसता उत्पन्न करते हैं।
- (iv) भाषा में प्रवाह व चमत्कार उत्पन्न करते हैं।
- (v) भाषा को समृद्ध बनाते हैं।

मुहावरो के प्रयोग में सावधानियों :-

1. पहले मुहावरा फिर उसका अर्थ तथा उगली लाइन से वाक्य प्रयोग करना चाहिए, जैसे :-

कात का धनी - बायदे का पक्का
में जानता हूँ कि वह बात का धनी है।

2. मुहावरे का वाक्य प्रयोग करते समय तुलना नहीं करनी चाहिए, जैसे - के समान, की तरह, के जैसा आदि शब्दों का प्रयोग नहीं। यथा :-

अँवे की लकड़ी - एक मात्र लठारा

अपने बड़े माता-पिता का एक-मात्र संलग्न मोहन

उनके लिए अँवे की लकड़ी ~~(के समान)~~ है।

3. मुहावरो को कहीं भी डाल देना गलत है, बल्कि कारण बताते हुए कार्य बताना है।
4. जैसे - पिटे वाक्य प्रयोग से बचना चाहिए। (पाक, चीन X)
5. वाक्य प्रयोग का संदर्भ यथा संभव होना रखना चाहिए।
6. वाक्य प्रयोग में मुहावरे का प्रयोग करना होता है न कि उसके अर्थ का।

7. मुहावरे को एक वाक्य में लिखना चाहिए, जैसे :-

देही खीर होना - कठिन काम होना।

अपने देश में प्रचलन-चार की जड़े इतनी गहरी हो गई हैं कि इसे खत्म करना देही खीर हो गई है।

लोकोक्तियाँ / कहावतें

लोकोक्ति का अर्थ है 'लोक समाज में कही जाने वाली वाक्यांश' तथा कहावत का अर्थ है:— 'कही जाने वाली बात'।

Def. ऐसा वाक्य जो चमत्कृत ढंग से, संक्षेप में, किसी सत्य या नीति का आशय, समस्त रूप से व्यक्त करे तथा अधिक समय तक प्रयोग में आकर जनजीवन में प्रचलित हो गया हो लोकोक्ति/कहावत कहलाता है। Def.

लोकोक्तियों / कहावतों की निम्न विशेष-ताएँ होती हैं:—

1. लोकोक्तियाँ / कहावतें प्रत्यक्ष अर्थ नहीं बल्कि सांकेतिक अर्थ देती हैं;
2. लोकोक्तियों / कहावतों में जीवन के गहरे तथा मूल्यवान् (अनुभव) दिये रहते हैं, इसलिये इन्हें 'ज्ञान की विराहियाँ' कहा जाता है।
3. लोकोक्तियाँ / कहावतें एक भाव से सम्बन्धित न होकर 'जन साधारण की परीक्षा' होती हैं।

लोकोक्तियों / कहावतों का महत्व:—

1. बोली को अधिक प्रमाणिक तथा जोरदार बनाती हैं।
2. भाषा स्पष्ट तथा जीवन्त हो उठता है।
3. भाषा को सुन्दर बनाने के साथ-2 जीवन की सीख भी देती हैं।
4. इनमें गहरे व मूल्यवान् अनुभव दिये रहते हैं।
5. अलंकार शास्त्र में 'लोकोक्ति अलंकार' नाम से प्रसिद्ध।

लोकोक्तियों / कहावतों के प्रयोग में सावधानियाँ :-

- (i) कहावतों का वाक्य प्रयोग $2\frac{1}{2}$ - 3 लाइन में देना चाहिए
- (ii) पहले प्रकरण देना है फिर कहावत । प्रकरण स्पष्ट होना चाहिए जो कहावत सिद्ध करे ।
- ~~Point~~ (iii) प्रकरण समाप्त होने पर - ठीक ही कहा गया है
- यह तो वही बात हुई
- महाँ यह बात चरितार्थ होती है
आदि शब्दों का प्रयोग करते हुए कहावतों को जोड़ना चाहिए ।

मुहावरा तथा लोकोक्ति की पहचान :-

- (i). 95% मुहावरों के अन्त में 'ना' आता है।
- (ii). मुहावरों के अन्त में क्रिया होती है।
- (iii). 95% मुहावरों का सम्बन्ध शरीर के विभिन्न अंगों से होता है।
- (iv) मुहावरे छोटे होते हैं; लोकोक्तियाँ बड़ी।
- (v). लोकोक्तियों / कहावतों में कोई न कोई शिक्षा होती है।

मुहावरा तथा लोकोक्ति में अन्तर

क्र.सं.	मुहावरा	लोकोक्ति
1.	मुहावरे <u>वाक्यमोश</u> हैं।	लोकोक्ति <u>पूर्ण वाक्य</u>
2.	मुहावरों का <u>स्वतंत्र</u> प्रयोग नहीं हो सकता।	कहावतों का <u>स्वतंत्र</u> प्रयोग होता है।
3.	मुहावरों का <u>अर्थ</u> बिना <u>वाक्य</u> प्रयोग के स्पष्ट नहीं होता	लोकोक्तियाँ अपने आप में अर्थपूर्ण होती हैं।
4.	मुहावरा एक पक्षीय होता है अर्थात् भाषा को सुन्दर बनाता है।	लोकोक्तियाँ भाषा को सुन्दर बनाने के साथ-2 <u>सीख</u> भी देती हैं।
5.	मुहावरा <u>होम</u> होता है तथा भाषा को उद्दीपित करता है।	लोकोक्ति <u>बड़ी</u> होती है तथा स्वयं में भावपूर्ण होती है।
6.	मुहावरों की <u>प्रिया</u> काल, वचन तथा लिंग के अनुसार बदल जाती है।	लोकोक्तियों पर काल, वचन, लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् जल की तरह रहती हैं।
7.	मुहावरा <u>भाषा</u> पर आधारित होता है।	लोकोक्ति <u>बोली</u> पर आधारित होती है।
8.	मुहावरों का प्रयोग अपेक्षाकृत <u>पढ़ा-लिखा</u> समाज अधिक करता है।	लोकोक्तियों का प्रयोग अपेक्षाकृत गरीब समाज में अधिक होता है।
9.	ये मुख्यतः <u>गद्य</u> रूप में होते हैं तथा सामान्यतः मौखिक के साथ-2 <u>लिखित</u> रूप में प्रयुक्त होते हैं।	ये मुख्यतः <u>पद्य</u> रूप में होते हैं तथा सामान्यतः मौखिक रूप में अधिक प्रयुक्त होते हैं।
10.	मुहावरों के उद्भव व विकास की दिशा <u>उपर से नीचे</u> की ओर होती है।	लोकोक्तियों के उद्भव व विकास की दिशा नीचे से <u>उपर</u> की होती है।

भावार्थ लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :-

- ① मूल अवतरण को दो-तीन बार ध्यान से पढ़ना तथा विचारों को रेखांकित करना।
- ② व्यर्थ बातों को हटा देना, रेखांकित वाक्यों व शब्दों को मिलाकर सार्थक वाक्य बना लेना, लिखे ध्यान की शक्ति के लिए बाहरी शब्द लिख जा सकते हैं।
- ③ पूरे शब्दों को गिनकर सार्थक वाक्यों के शब्द को आधा कर लेना
- ④ भावार्थ की भाषा सरल, स्पष्ट तथा क्रमबद्ध होना चाहिए
- ⑤ अपनी ओर से खण्डन-मण्डन या टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहिए।
- ⑥ अलंकारिक भाषा या शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

व्याख्या [Explanation]

व्याख्या किसी भाव या विचार का विस्तार से विवेचना है। इसमें अध्ययन, चिन्तन, मनन की पूरी स्वतंत्रता रहती है।

- (i). व्याख्या प्रसंग-निर्देशित होनी चाहिए।
- (ii). मूल विचार/भाव की संतुलित विवेचना होनी चाहिए।
- (iii). मूल विचार के गुण/दोष पर समान रूप से प्रकाश डालना चाहिए।
- (iv). रुक लाइन की व्याख्या 10 लाइन में देना चाहिए।
- (v). महत्वपूर्ण बातों पर अंत में टिप्पणी देना चाहिए।

Q. No - (2)

(30) Marks

संक्षेपण [Precis]

किसी अवतरण के अप्रासंगिक, असम्बद्ध, पुनरावृत्त, अनावश्यक बातों को हटाकर सामान्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण संक्षिप्त संकलन 'संक्षेपण' कहलाता है।

संक्षेपण एक मानसिक व्यायाम है जिसे निरन्तर अभ्यास द्वारा ही साधित किया जा सकता है। संक्षेपण के निम्नालिखित गुण होते हैं:—

- (i). संक्षिप्तता संक्षेपण का मुख्य गुण है।
- (ii). संक्षेपण स्वतः प्रणीत होना चाहिए, कोई भी मरुत्वपूर्ण बात नहीं डालना चाहिए।
- (iii). भाषा शुद्ध, सरल तथा परिष्कृत होना चाहिए।
- (iv). संक्षेपण में भाव तथा भाषा का प्रवाह होना चाहिए।

संक्षेपण के नियम :—

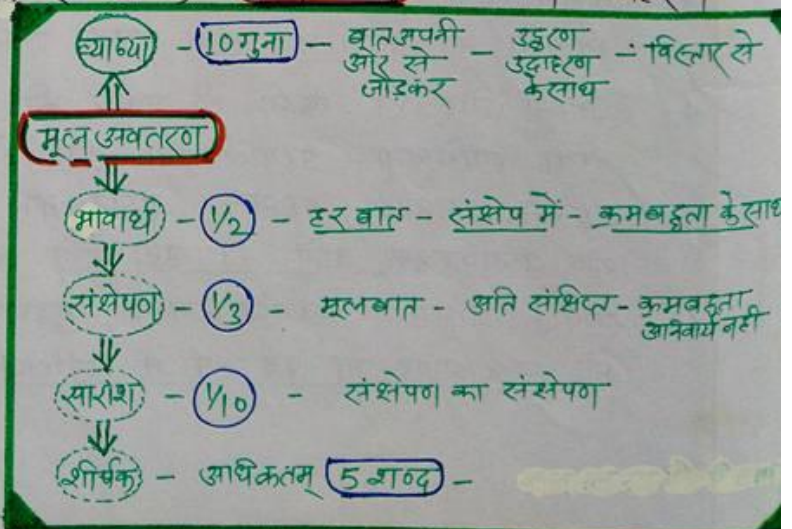
1. मूल अवतरण को कम से कम तीन बार पढ़ कर आवश्यक शब्दों, वाक्यों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
2. रेखांकित वाक्यों के आधार पर एक रूप रेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
3. क्रमबद्धता में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है परन्तु विचारों की तारताम्यता बनी रहना चाहिए।
4. अपनी छोर से किसी भी प्रकार की टिका-टिप्पणी तथा आलोचना-प्रत्यालोचना नहीं होना चाहिए।
5. उद्धरण, उदाहरण, दृष्टान्त, तुलनात्मक विचारों, असम्बद्ध एवं अनावश्यक बातों को हटा देना चाहिए।
6. समास, प्रत्यय, वाक्यांश, वाक्य, मुहावरों, कठवर्तों आदि को एक शब्द या पद रूप में संक्षिप्त करना चाहिए।

7. संक्षेपण में व्याकरण के सामान्य नियमों का पालन होना चाहिए, संक्षेपण तेलीग्राफिक नहीं होना चाहिए।
8. भाषा शुद्ध, सरल तथा स्पष्ट होना चाहिए।
9. शैली 'अन्य पुरुष' होनी चाहिए।
10. कथन भूतकाल तथा परोक्ष होना चाहिए।
11. रूपरेखा को अन्तिम रूप देने से पहले एक-दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए जिससे आवश्यक विचार छूटने न पाये।
12. शब्द संख्या पहले से ही निर्धारित कर लेनी चाहिए जो मूल अवतरण का एक-तिहाई हो। आरंभ से ले कर वाक्य से करना चाहिए, जो मूल विषय को स्पष्ट कर दे।

सारांश :- सारांश संक्षेपण का संक्षेपण होता है। यह मूल अवतरण का $1/10$ ($1/3 \times 1/3$) होता है।

शीर्षक :-

- (i). मूल अवतरण को कई बार पढ़ कर 'केन्द्रीय विषय' ढूँढना
- (ii). शीर्षक बढी होता है जिसका प्रभाव अवतरण में शाश्वत रूप से विद्यमान हो।
- (iii). शीर्षक अधिक से अधिक 'पाँच शब्द' का होना चाहिए।



—: केवल :—
समीक्षा अधिकारी
15 अंक

सारणी रूप में सार [Tabular form]

सावधानियों :—

- (i). जिस भाग का संक्षिप्त लेखन लिखना हो उसे सावधानी के साथ पढ़ा जाय तथा उपयोगी व अनुपयोगी अंशों को पृथक् कर लेना चाहिए।
- (ii). संक्षिप्त लेखन अपने शब्दों में होना चाहिए, मूल शब्दों को ही लिखना अच्छा नहीं।
- (iii). एक ही बात कई बुक्तों में अलग-2 हो तो उसे एक साथ संयोजित कर लेना चाहिए।
- (iv). पुनरावृत्ति कदापि नहीं।
- (v). न मूल रूप में संशोधन किया जाय और न ही अपनी तरफ से कुछ जोड़ा जाय।
- (vi). जहाँ अधिकारियों के नाम व पद दोनों का उल्लेख हो वहाँ नाम छोड़ देना चाहिए। केवल पद नाम का उल्लेख करें।
- (vii). व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियाँ बिल्कुल नहीं होनी चाहिए।
- (viii). संक्षिप्त लेखन पहले अल्प लिखकर उसे मूल से मिलान कर लेना चाहिए।
- (ix). संक्षिप्त लेखन केवल एक ही वाक्यार्थ में होनी चाहिए।
(About 40 words).
- (x). शुरुआत { निवेदन करते हुए...
अपेक्षा करते हुए...
अभिन्न करते हुए... और से करना चाहिए।
सुझाव देने हुए...
प्रार्थना करते हुए...
जागरूकता देने हुए...
आभार देने हुए...

क्रमंक ↑	पत्रांक ↑	दिनांक ↑	प्रेषक	प्रेषिनी	विषय तथा आशय
क्रमंक	पत्र-संख्या	तिथि			
1	309/25/ 2009 (25)	15.1.2013	अपर सचिव भारत सरकार	कुलपति, समस्त विश्व- विद्यालय	① सूचित करते हुए भारत सरकार के अपर सचिव ने समस्त विश्वविद्यालयों के कुलपति से यह ② ④ अपेक्षा की है कि विभिन्न संकायों में शोधरत छात्रों की सूची तथा उन पर व्यय भार की शीघ्र ⑤ विन मिलावट की प्रेषण की व्यवस्था करें। ⑥

(1½), 2, 2, 3, 3, (4½) am.

1. सूचित करते हुए
2. (प्रेषक) ने
3. (प्रेषित) से
4. यह अपेक्षा की है कि
6. (विषय) तथा
7. (आशय) है

Q. No-(1)

60 Marks
(PCS-Upper)

RO/①②

21+15 Marks
Lower ①

[संक्षेपण, प्रश्नोत्तर
लेखन, व्याख्या, वार्ता]

भावार्थ [Substance]

गद्यांश या पद्यांश में आये विचारों को संक्षेप व सल्ल भाषा में लिख देने का प्रयास भावार्थ है।

भावार्थ में तीन बातें ध्यान देना चाहिए:—

- (i). भावार्थ 'संक्षिप्त' होना चाहिए।
- (ii). भावार्थ व्याख्या नहीं है।
- (iii). भावार्थ अन्वयार्थ नहीं है।

भावार्थ गागर में सागर भरने जैसा है।

इसमें मूल अवतारण का कोई भाव या विचार नहीं डलना चाहिए।
इसमें अपनी ओर से कोई टीका-टिप्पणी या खंडन-मंडन नहीं करना चाहिए। यह सामान्यतः मूल अवतारण का आधा होता है।

भावार्थ की प्राथमिक विशेषता है—

संक्षिप्तता, परन्तु यह संक्षेपण से विन्कुल भिन्न होता है जो निम्न है:— : भावार्थ एवं संक्षेपण में अन्तर:—

- (i). भावार्थ में हर बात या विचार संक्षेप में लिखा जाता है परन्तु संक्षेपण में केवल मुख्य बात संक्षेप में लिखा जाता है।
- (ii). भावार्थ में क्रमबद्धता अनिवार्य है, परन्तु संक्षेपण में क्रमबद्धता अनिवार्य नहीं है। यदि मूल बात अवतारण में विन्कुल बात में कही गई हो तो उसे पहले लिखा जाता है, परन्तु विचारों में तारतम्यता बनी रहनी चाहिए।
- (iii). भावार्थ गद्यांश का लगभग $\frac{1}{2}$ होता है, जबकि संक्षेपण गद्यांश का लगभग $\frac{1}{3}$ होता है।

Q. No (4) (द)

(10) अंक

Question No (10)

(5) अंक

वाक्य अशुद्धियाँ

वर्तनी

अनुचित शब्द

पदक्रम

पुनरावृत्ति

सर्वनाम

लिङ्ग

कारक

वचन

विशेष अशुद्धि

शृंगार - शृंगार
कवियत्री - कवायित्री
हृद - हृष्ट
आर्द्र - आर्द्र
उपरोक्त - उपर्युक्त
सन्पास - संन्यास
खिन्दुर - खिन्दूर
उज्ज्वल - उज्ज्वल
प्रज्ज्वल - प्रज्वल
पूज्यनीय - पूज्य/श्रजनीय
व्यवसायिक - व्यावसायिक
राजनैतिक - राजनीतिक
अंतर्धान - अंतर्धान
संगृहीत - संगृहीत
तत्त्व - तत्त्व
महत्त्व - महत्त्व
सौन्दर्यता - सौन्दर्य/सुन्दरता
निर्देशी - निर्देश
तरुदाया - तरुदाया
प्रतिदाया - प्रतिदाया
श्रोत - श्रोत
अनाधिनी - अनाथा
गृहीत - गृहीत
मिथलान - मिथलान
अभीष्ट - अभीष्ट
गदर्भ - गर्भ
श्राप - शाप
गोचली - गोचली
मंजु - मंजु

- ① एक गिलास पानी दिजिए।
- ② इस समय मेरी (आय) 35 वर्ष की है। (उम्र/आय)
- ③ (आँखों) से आँसू निकल (पड़ा)। (आँख - पड़े)
- ④ कृष्ण के (अनेकों) नाम हैं। (अनेक)
- ⑤ उसे (बीना) (बजाना) नहीं (आती)। (बीना - बजानी - आती)

तरुद्धाया - तरुच्छाया
 तदोपरान्त - तदुपरान्त
 दुरावस्था - दुरवस्था
 नम्रमण्डल - नम्रोमण्डल
 पुरस्कार - पुरस्कार
 सदोपदेश - सदुपदेश
 चक्षुरोग - चक्षुरोग
 निरोग - नीरोग
 सन्मुख - सम्मुख
 अष्टवक्र - अष्टावक्र
 एकतारा - इकतारा
 एकलौता - इकलौता
 निर्दोषी - निर्दोष
 उंगली - उँगली
 जहाँ - जहों
 डाँट - डोंट
 पाँचवाँ - पौँचवाँ
 कौशल्य - कोशल्य

निर्दयी - निर्दय
 सत्वगुण - सन्त्वगुण
 दिवारालि - दिवाराल
 निर्गुणी - निर्गुण
 नेतागण - नेतृगण
 महाराजा - महाराज
 योगीराज - योगिराज
 विद्यार्थीगण - विद्यार्थिगण
 स्वामीभक्ति - स्वामिभक्ति
 प्राग्गवान् - प्राग्यवान्
 विधिवत् - विधिबत्
 श्रीमान् - श्रीमान्
 बुद्धिमान् - बुद्धिमान्
 साक्षात् - साक्षाल्
 अंगना - आँगन
 पहुँच - पहुँच
 महंगा - महंगा
 जाऊंगा - जाऊंगा
 मुँह - मुँह
 अनेकों - अनेक

Exp: i. मैं अनेकों बार बनारस गया। (अनेक)

(ii). कृष्ण के अनेकों नाम हैं। (अनेक)

[अनेक स्वरूप में बहुवचन है अतः अनेकों गलत है]

(iii). पद्मिनी अपनी सौन्दर्यता के लिए प्रसिद्ध थी।
(सौन्दर्य / सुन्दरता)

मन्त्रीमण्डल - मन्त्रिमण्डल
 महान् - महान्
 जगत् - जगत
 आर्य - आर्य
 कालिदास - कालिदास
 बाल्मीकि - बाल्मीकि
 पाणिनी - पाणिनी
 विरहिणी - विरहिणी
 जातीय - जातीय

गत्यावरोध - गत्यवरोध
 झरिका - झरका
 पशु - पशु
 कुमुदनी - कुमुदिनी
 उषा - उषा
 दुरावस्था - दुरवस्था
 अश्वीन - अश्वीन
 इष्ट - इष्ट
 पृष्ठ - पृष्ठ

✓ उासी, उासी — उाई, उाई X
✓ खासी, खासी — खाई, खाई X

✓ डुई, डुई — डुयी, डुयी X
✓ डुई, डुई — डुयी, डुयी X

दीजिए
लीजिए → दीजिये X
पीजिए
कीजिए
खीजिए

2. अनुचित शब्द :-

- आकाश में विजली गरज रही है। (चमक)
- आकाश में वायुयान दौड़ रहे हैं। (उड़)
- रेडियो की उत्पत्ति फिलने की? (आविष्कार)
- एन्नारि के मार्ग में संकट भी आते हैं। (बाधाएं)

3. पदक्रम की अशुद्धियाँ :- वाक्य में कभी-कभी शब्द क्रम में गड़बड़ लिखे रहते हैं। जैसे :-

- यहाँ पर शुद्ध गाय का दूध मिलता है।
यहाँ पर गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
- पानी का एक गिलास लाओ।
एक गिलास पानी लाओ।
- मीना ने बाजार से एक मोतियों की माला खरीदी।
मीना ने बाजार से मोतियों की एक माला खरीदी।
- कैदी के हाथों में बेड़ियाँ एवं पैरों में हथकड़ियाँ लगी थीं।
कैदी के हाथों में हथकड़ियाँ एवं पैरों में बेड़ियाँ लगी थीं।
- मैदान में बहुत से पशु-पक्षी उड़ते एवं चरते हुए दिखाई देते हैं।
मैदान में बहुत से पशु-पक्षी चरते एवं उड़ते दिखाई देते हैं।

4. पुनरावृत्ति :-

- वह प्रातः काल के समय घूमने जाता है।
- लम्बे संचर्ष के बाद भारत गुलामी की दासता से मुक्त हुआ।
- मेरे पास केवल पच्चास रुपये मात्र हैं।
- मोहन की व्यवस्था का प्रबन्ध करें।
- रविवार के दिन एकाधिक बन्द रहता है।
- राम के वन गमन पर दशरथ विलाप करके रोने लगे
- आप अपनी बात का स्पष्टीकरण करने के लिए स्वतंत्र हैं।
- मैं संकुशल हूँ।

5. सर्वनाम संबंधीं अशुद्धियां

- (i). शिकारी ने उस पर गोली चलाई लेकिन शेर बच निकला।
शिकारी ने शेर पर गोली चलाई लेकिन वह बच निकला।

यदि किसी वाक्य में संज्ञा व सर्वनाम दोनों दिए हैं तो संज्ञा पहले आएगा सर्वनाम बाद में

- (ii) मेरे को नहीं मालूम। (मुझे)
(iii) तेरे को कुछ नहीं मालूम। (तुमको)
(iv) वह लोग जा रहे हैं। (वे)
(v). आप लोग अपने रुपये ले जाइए। (अपने-अपने)
(vi). सब लोग अपनी राय दें। (अपनी-अपनी)

6. लिंग संबंधीं अशुद्धि :-

- ~~प्र~~(i). मुझे तुमसे एक बात कहना है। (कहनी)
~~प्र~~(ii). अंको की औसत अच्छी है।
का अच्छा
(iii). हमारी प्रदेश की जनता बहुत सहनशील है। (हमारे)
~~प्र~~(iv) कमीज की आस्तीन फटी है। (का) (फटा)
(v). उसे बीना बजाना नहीं आता।
वीणा बजानी आती
(vi) रेलगाड़ी में भारी भरकम भीड़ थी। (संख्या में)
(v). उसने अपनी बात धीरे से बताया। (बतायी)

कमीज, कालर, फल, तना - पुल्लिंग
बाँट, बटन, पत्तियाँ, डालें - स्त्री लिंग

7. कारक संबंधीं अशुद्धि :- (जे, को, पर, में etc.)

- (i). मोहन शहर के कपड़े लाकर गाँव को बेचता है।
से में
- (ii). गाँव के सभी लड़के शहर को चले गये।
में
- ~~Int~~ (iii). पुस्तक को जहाँ से उठाओ वहीं पर रख दो।
में
- (iv). राम मोहन मारा।
राम ने मोहन को मारा।
- (v). मुझे बहुत सारी पुस्तकों को पढ़ना होता है।
मुझे बहुत सी पुस्तकों को पढ़नी पड़ती है।
- (vi). गाँव के भीतर दो कुँए हैं। (में)
- ~~Int~~ (vii). मेज के ऊपर चढ़ जाओ। (पर)
- (viii). सीमा ने अपनी सहेली के लिए उपहार दिया। (को)
- (ix). आज बजट के ऊपर बहस होगी। (पर)
- (x). आजकल जनता के अन्दर बहुत असन्तोष है। (में)
- (xi). वह रोज आफिस को जाता है।

8. वचन संबंधीं अशुद्धि :-

- ~~Int~~ (i). उसके प्राण निकल गये।
- (ii). शेर को देखते ही उसके प्राण उड़ गये।
- (iii). मैंने गुरु जी के दर्शन किये।
- (iv). गांधी जी के हाथ घुटनों तक लम्बे थे।
- ~~Int~~ (v). उसकी आँख से आँसू निकल पड़े।

प्राण आँसू हाथ समय* आदि शब्द हमेशा बहुवचन (आदरसूचक शब्द) में होते हैं।

- (vi). मेरी छड़ी में तीन बजा है। (बजे)
- (vii). पेड़ों पर कोयल खेल रही थी (पेड़)
एकवचन
- (viii). इन हालातों में चुनाव संभव नहीं है। (हालात)

* समय में एक के लिये बजा है शेष के लिए बजे हैं

- (ix) शादी में सभी वर्ग के लोग आये थे। (वर्गों)
 (x) शादी में हर वर्ग के लोग आये थे। (वर्ग)
 (xi) हम सब की स्थिति एक जैसी है। (स्थितियाँ)
 (xii) प्रत्येक व्यक्ति जीना चाहते हैं। (चाहता)
 (xiii) उसने तरह-तरह का रूप धारण किया। (के)
 (xiv) बेटी पराये घर का धन छेता है। (छेती)

9. विशेष अशुद्धि :-

- * क्रिया कर्ता के अनुसार निर्धारित होगी है, यदि एक साथ कई कर्ता हो तो क्रिया अन्तिम कर्ता के अनुसार होगा, परन्तु यदि कर्ता पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एक साथ वाक्य में हो तो क्रिया पुल्लिंग के अनुसार होगा, शर्ते ही स्त्रीलिंग कर्ता बाद में हो।
- * छोटा अपने बड़े को अर्पित करता है तथा बड़ा अपने छोटे को प्रदान करता है।
- * फोटो खींचा जाता है, चित्र बनाया जाता है
- * हस्ताक्षर किया जाता है
- * बात श्रुती जाती है, प्रश्न किया जाता है, उत्तर दिया जाता है।

- (i) मैदान में तीन घोड़े, दो बैल, एक बकरी चर रहे हैं। (रही)
 (ii) मोहन ने बाजार से कलम, छाता एवं तीन बोतलें खरीदी। (खरीदी)
 (iii) पति-पत्नी जा रही हैं। (रहे)
 (iv) राजा-रानी सिंहासन पर बैठी हैं। (बैठे)
 (v) दोनों ने गुरु जी को अभिनन्दन पत्र प्रदान किया। (अर्पित)
 (vi) मुख्य अतिथि ने विजेता टीम को पुरस्कार अर्पित किया। (प्रदान)
 (vii) मोहन चित्र खींच रहा है। (बना)
 (viii) बैंक पर अपने हस्ताक्षर बना दीखित। (कर)
 (ix) इतने अधिक प्रश्न प्रदान ठीक नहीं हैं। (करना)
 (x) यह पुस्तक सौ रुपये की की है। (खरीदी)

ब्रत - व्रत
 भगीरथी - भागीरथी
 भागवत् - भागवत
 मुमुर्षु - मुमुर्षु
 मूर्धन्य - मूर्धन्य
 महत्त्व - महत्त्व
 याज्ञवल्क्य - याज्ञवल्क्य
 बाहनी - बाहिनी
 बाल्मीकी - बाल्मीकि
 वनिक - वाणिक
 संग्राहित - संगृहीत
 सिन्दूर - सिन्दूर
 सद्दृश्य - सद्दृश
 श्मशान - श्मशान
 शुभ्रूषा - शुभ्रूषा
 श्रोत - श्रोत
 श्रीयुत - श्रीयुत
 हिरण्यकशपु - हिरण्यकशिपु
 शूर्पणखा - शूर्पणखा
 सत्त्व - सत्त्व
 सृजन - सर्जन
 सम्राज्य - साम्राज्य
 सुसुप्ति - सुसुप्ति
 सम्वाद - संवाद
 सह्यस्यामला - सह्यश्यामला
 शृंगार - शृंगार
 शारिरिक - शारीरिक
 हितेच्छुक - हितेच्छु
 अनुसंगिक - आनुसंगिक
 अध्यत्मिक - आध्यात्मिक
 चातुर्यता - चातुर्य / चतुरता
 कौशलता - कौशल / कुशलता

द्विवार्षिक - त्रैवार्षिक
 धैर्यता - धैर्य / धीरता
 अश्रयन्तरिक - आश्रयन्तरिक
 असहनीय - असह्य
 अनुयार्थ - अनुयायी
 तत्त्व - तन्त्र
 तत्कालिक - तात्कालिक
 द्विवार्षिक - द्वैवार्षिक
 नैपुणता - नैपुण्य / निपुणता
 प्रकुल्लित - प्रकुल्ल
 प्रतिनिधिक - प्रातिनिधिक
 सन्यास - संन्यास
 सौजन्यता - सौजन्य
 निरपराधी - निरपराध
 श्रयणीय - श्रणीय
 प्रमाणिक - प्रामाणिक
 पौरुषत्व - पौरुष
 बाहुल्यता - बाहुल्य / बहुलता
 राजनैतिक - राजनीतिक
 व्यवसायिक - व्यावसायिक
 सौन्दर्यता - सौन्दर्य / सुन्दरता
 सप्ताहिक - साप्ताहिक
 संसारिक - सांसारिक
 अनाधिनी - अनाथा
 कोमलांगिनी - कोमलांगी
 विहंगिनी - विहंगी
 अत्योक्ति - अत्युक्ति
 अद्यापि - अद्यापि
 अनाधिकारी - अनधिकारी
 आशीर्वाद - आशीर्वाद
 किम्बदन्ती - किंवदन्ती
 दबदबाया - दबदबाया

1. वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ

अनाधिकार - अनाधिकार	ईर्ष्या - ईर्ष्या
अनुकूल - अनुकूल	उद्बुधल - <u>उद्बुधल</u>
अनुशरण - अनुसरण	उंचाई - <u>ऊंचाई</u>
आहल्या - अहल्या	औद्योगीकरण - उद्योगीकरण
आठितिय - आठितीय	कविधिली - कवायिली
अन्तर्ध्यान - अन्तर्धनि	केन्द्रीयकरण - <u>केन्द्रीकरण</u>
अमावश्या - अमावस्या	गृहीत - गृहीत
आर्द्र - आर्द्र	चर्मैतिकर्ष - चरमोत्कर्ष
अल्हाद - आह्लाद	जमाता - जामाता
इकठ्ठा - <u>इकट्ठा</u> (इकट्ठा)	ज्योत्स्ना - ज्योत्स्ना
उपरोक्त - उपर्युक्त	त्याज - त्याज्य
उत्पात् - उत्पात	तत्व - तन्त्र
उज्ज्वल - उज्ज्वल	दिपिका - दीपिका
कलस - कलश	इन्द्र - इन्द्र
केलाश - केलास	निरपराधी - निरपराध
कौतुहल - कौतूहल / कुतूहल	नुपुर - <u>नूपुर</u>
सत्र - द्रव	प्रशंसा - <u>प्रशंसा</u>
गृहीता - <u>गृहीता</u>	पुण्य - पूज्य
चिन्ह - चिह्न	परिक्षण - परीक्षण
जाग्रत - जागरित	ब्रम्ह - ब्रह्म
जेष्ठ - ज्येष्ठ	वृज - व्रज
ताड़ित - ताडित	भैय्या - भैया
दधिची - दधीचि	मुहुर्त्त - मुहूर्त्त
द्वारिका - द्वारका	महत्वाकांक्षा - महत्त्वाकांक्षा
निरिह - निरीह	महात्म - महात्म्य
पत्नी - पत्नी	यद्येष्ठ - यद्येष्ठ
अन्ताक्षरी - अन्त्याक्षरी	विभीषिका - विभीषिका
अर्थात् - अर्थात्	वांगमय - वाङ्मय
आह्वान - आह्वान	प्रज्ज्वलित - प्रज्ज्वलित
आजीविका - आजीविका	पृथक् - पृथक्